ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 41 कुल पृष्ठ-12 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 का.कृ.-07

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर महर्षि के मिशन को पूर्ण करने का संकल्प लें आर्यजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके मानव मात्र के कल्याण का दायित्व आर्यों को सौंपा था

– स्वामी आर्यवेश

दीपावली प्रकाश का पर्व है। ज्योति पर्व दीपावली का महान सन्देश है कि जैसे प्रकाश सबका मार्ग प्रशस्त करता है उसी प्रकार सब मनुष्यों के कल्याण के लिए हमें भी कार्य करने का संकल्प करना चाहिए जिससे सम्पूर्ण मानवता का उपकार हो सके। समाज में फैले अज्ञान, अन्याय एवं अभाव को मिटाने के लिए यह आवश्यक है कि समाज में शोषित, पीड़ित, दबे–कुचले लोगों के जीवन दीपों को प्रज्ज्वलित करने में अपना योगदान करना होगा जिससे उनका जीवन प्रकाशमय हो सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दीपावली पर्व से गहरा सम्बन्ध है। दीपावली के ही दिन महर्षि दयानन्द जी ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। समूचा आर्य जगत दीपावली के पर्व को ऋषि निर्वाणोत्सव के रूप में मनाता है और इस दिन उनके बलिदान, महत्व, योगदान और विशेषताओं को स्मरण किया जाता है उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी जाती है। आर्य समाज के इतिहास में दीपावली का पर्व स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का स्मृति पर्व है। ऋषि दयानन्द जी ने दीपावली के दिन शरीर का त्याग कर संसार को सन्देश दिया था, "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतम् गमय।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना अध्यात्म, दर्शन, धर्म, शिक्षा, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को दृष्टिगत रखकर की थी और इन क्षेत्रों में पनप रही अव्यवस्था, अप–संस्कृति, उच्छृंखलता, अवैज्ञानिकता के उन्मूलनार्थ वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। हम इस लक्ष्य में कितना सफल हुये हैं महर्षि निर्वाण दिवस के अवसर पर हमें गहन चिन्तन करना होगा। ऋषिवर दयानन्द ने जिन मूल्यों का सूत्रपात किया था वे वेद पर आधारित हैं। वेद की शिक्षाओं को अपना कर ही समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार से विदा लेने से पूर्व अपने अनुयायियों को आदेश दिया था कि सभी मेरे पीछे आ जाओ और इस भवन के दरवाजे, खिड़की खोल दो, उनके इस आदेश के दो निहितार्थ थे, एक तो वेदों की ओर लौटो और दूसरा आर्य समाज के दरवाजे सबके लिए खुले रखो। आज आवश्यकता है आर्य समाज को सक्रिय किया जाये। आर्य समाज केवल साप्ताहिक सत्संग के लिए न हों बल्कि वहां योग, संस्कृत शिक्षण, स्वास्थ्य शिविर, पुस्तकालय, वाचनालय, नियमित रूप से चलें। गो–रक्षा, भ्रूणहत्या, आतंकवाद, नशाखोरी, जातिवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्तन आदि की वहाँ बैठकें हों। हम कितने सक्रिय एवं तेजस्वी बनकर विश्व का कल्याण कर रहे हैं, इन सब क्रिया–कलापों पर आर्य समाज का भविष्य निर्भर है। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण व नारी उत्पीड़न, असमानता आदि से समाज त्रस्त है और आर्य समाज को ही इनका उन्मूलन करना है। आर्य समाज की आज देश व विश्व मानव समाज को पहले से भी अधिक आवश्यकता है। वास्तविक रूप से यदि कोई इन बुराईयों से निजात दिला सकता है तो वह है आर्य समाज संगठन। इसलिए आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं को आगे आना चाहिए और समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करके कार्य करना चाहिए।

दीपावली सारे देश में तथा विदेशों में उत्साहपूर्ण ढंग से मनाई जायेगी। हम आर्यों को दीपावली के सम्बन्ध में अपने बच्चों तथा अपने पास–पड़ोस के लोगों को यह समझाना चाहिए कि इस दिन पटाखे आदि चलाने से जहां वायुमण्डल में प्रदूषण फैलता है वहीं हमारे स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। इसके अतिरिक्त भीषण दुर्घटना होने का भी डर हमेशा सताता रहता है। अतः ऐसे कार्य न करें जिससे स्वयं को और अन्यों को नुकसान पहुंचने की संभावना हो। अपने–अपने घरों में मिट्टी के दीपक जलायें। दीपावली के दिन बाजारों में और पार्कों में विधि–विधान से यज्ञ करें और लोगों को दीपावली के वैदिक स्वरूप की जानकारी दें।

इस अवसर पर हम सबको यह भी विचार करना चाहिए कि महर्षि के आर्य समाज को हम तेजस्वी कैसे बना सकते हैं। इस निर्वाण दिवस पर हम सब संकल्प करें कि आर्य समाज संगठन में अधिक से अधिक नये सदस्य बनायें, क्योंकि आर्य समाज संगठन के पुरानी पीढ़ी के निरन्तर जा रहे हैं और नये लोगों का प्रवेश यदि नहीं होगा तो संगठन का भविष्य कैसे सुरक्षित रहे पायेगा। यह अत्यन्त चिन्तनीय है। हमें युवाओं को अपने साथ जोड़ना होगा और इसके लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। इस समय देश संक्रमणकाल से गुजर रहा है। देश का युवा पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर नशे एवं भोगवाद के जाल में फंसता जा रहा है। समाज में अपसंस्कृति ने अपने पैर पूरी तरह पसार लिये हैं, ऐसी स्थिति में लोगों की नजर आर्य समाज संगठन की तरफ है, क्योंकि इन सबसे छुटकारा आर्य समाज संगठन ही दिला सकता है।

आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से ही नशाखोरी, गौहत्या, अश्लीलता तथा धार्मिक पाखण्ड आदि के विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन करता आया है। डेढ़ वर्ष पूर्व कोरोना जैसी भंयकर महामारी आ जाने के कारण पूरे देश में तथा विश्व में अफरा–तफरी का माहौल बना रहा। कोरोना महामारी के मद्देनजर तमाम पाबन्दियाँ लगाई गई जिससे आर्य समाज संगठन भी काफी प्रभावित हुआ। परन्तु अब स्थिति ठीक है और हम सबको एकजुट होकर पुनः पूरे देश में जन–जागरण यात्राएँ तथा सम्मेलन आदि करके आम जनता को जागरूक करने का कार्य युद्ध स्तर पर करने की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक आर्य का यह कर्तव्य है कि उपरोक्त मुद्दों को गाँवों, नगरों तथा शहरों में लेकर जायें और लोगों में इन कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता पैदा करें। महर्षि के निर्वाण दिवस पर हम सब संकल्प करें कि महर्षि के सपनों का समाज बनाने के लिए हम सब एकजुट होकर निष्ठापूर्वक प्रयास करते रहेंगे।

ऐ मेरे प्यारे ऋषि

जलते कितने दीप बुझ गए, चलते सूरज चांद रुक गए।
तुमने दिया जलाया ऐसा, आंधी जिसको शीश नवाए।
बादल तुम्हें ले गया कोई, बरस रहे फिर भी अमृत से।
जितना गया मिटाया तुमको, उतने बने अडिग पर्वत से।
कोई कंचन मेंट न पाया, माटी के पद-चिन्ह तुम्हारे।
तुमने चरण बढ़ाया ऐसा, मंजिल जिसको शीश नवाए।
ऐसा मंत्र जगाया तुमने, गंगा जल जिस पर न्योछावर।

ऐसा रचा तपोवन तुमने, राजमहल जिस पर न्योछावर।
बना हृदय ही देवालय 'ओ', वाणी शंखध्वनि सी गूँजी।
उठी ओ३म् की मूरत ऐसी, मंदिर जिसको शीश नवाए।
जो तुमने कह दिया वचन से, वेदों की बन गई ऋचाएँ।
जो तुमने लिख दिया कलम से, युग-युग की बन गई कथाएँ।
तर्थ बन गया हर कण जिसको, मिला पाँव का परस तुम्हारा।
ऐसी पुण्य कथा लिख डाली, संगम जिसको शीश नवाए।।

– श्री जगदीश चन्द्र 'जीत'

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

प्रकाश पुंज ! तुम्हें प्रणाम

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

दीपक से किसी ने पूछा नन्हें से दीपक? तुम क्यों जल रहे हो। अनवरत बिना थके तुम यह तपस्या क्यों कर रहे हो। दीपक बोला - क्या तुम्हें मेरा लक्ष्य दिखलायी नहीं देता। मैं जगतव्यापी अन्धकार के साथ युद्ध कर रहा हूँ। अन्धकार को दूर भगाकर मैं संसार को प्रकाश देना चाहता हूँ। कैसा प्रकाश! सत्य का प्रकाश ओह! यह बात है तो क्या तुम विश्वव्यापी अन्धकार पर विजय प्राप्त कर लोगे। क्या तुम्हारे इस साहस पर लोग हंसेंगे नहीं? इतना ही नहीं अपितु वे तो तुम्हारे ऊपर कंकड़-धूल की वर्षा करेंगे। वे तुम्हें फूंकमार कर बुझा देना चाहेंगे और कुछ ऐसे भी होंगे जो तुम्हें चकनाचूर करके समूल नष्ट कर देना चाहेंगे। इतनी सम्भावना होने पर भी तुम यह अदम्य साहस किस लिए कर रहे हो।

दीपक का उत्तर था - यह सब कुछ होगा मैं जानता हूँ फिर भी मैं यह संकटपूर्ण कार्य कर रहा हूँ क्योंकि प्रकाश देना मेरा धर्म है, मेरा व्रत है। मैं इसे नहीं छोड़ सकता। मैं जलता हूँ, परहित में सतत जलता हूँ, किन्तु जलकर भी प्रकाश देता हूँ। संसार का पथ प्रदर्शक बनता हूँ और तुम नहीं जानते कि मेरे इसी व्रत के कारण, मेरी इसी सत्य निष्ठा के कारण, मेरी इसी अडिगता-निर्भयता के कारण तो महर्षि दयानन्द जैसे बाल ब्रह्मचारी ब्रह्म योगी भी मेरा उदाहरण देते हुए कहते हैं - चाहे मेरी एक-एक अंगुली को बत्ती बनाकर दीपक में जला दिया जाये फिर भी मैं राजस्थान प्रचार करने अवश्य जाऊँगा। और सचमुच उन्होंने वही किया जो कि कहा था। उनके साथ वही हुआ जिसकी सम्भावना थी। कृतघ्न-निष्ठुर लोगों ने उस प्रकाशपुञ्ज को समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं अपितु उनके ऊपर भी धूल-कंकड़-पत्थर फेंके गये। उन पर आक्रमण किये गये। उन्हें अपमानित किया गया। जब एक चेतन व्यक्ति ने इन सबकी परवाह नहीं की तो मैं एक जड़ पदार्थ इन सबकी क्यों परवाह करूँ। मेरा धर्म है प्रकाश देना और वह मैं दे रहा हूँ।

यह मत समझो कि मैं मिट्टी का हूँ, कमजोर हूँ, छोटा हूँ तो मैं इस विशाल संसार को क्या प्रकाश दे सकूंगा। लोग मुझे तोड़ देंगे। मिट्टी से तो सभी प्राणी बने हैं किन्तु जो इस मिट्टी के घर में दिये आत्मतत्व को पहचान लेता है फिर वह इस पार्थिव शरीर की चिन्ता नहीं करता। दयानन्द ने यही किया था। उन्होंने भरी सभा में घोषणा पूर्वक कहा था 'लोग मुझे भय देते हैं, यह मत कहो, वह मत कहो। कलेक्टर नाराज हो जायेगा। कमिश्नर नाराज हो जायेगा। अरे! कोई मुझे वह सूरमा बतलाए जो मेरी आत्मा का नाश कर सके। और जब तक ऐसा नहीं है तब तक यह सम्भव नहीं कि मैं सत्य के मार्ग से हट जाऊँ। मैं छोटा भी नहीं हूँ। व्यक्ति विचारों से ही छोटा या महान बनता है। उन विचारों के आधार पर किये गये कार्यो से ही देव या भगवान बनता है, शरीर के आकार से नहीं। इसलिए मेरे कार्य को देखो। मेरे संकल्प को देखो। अपने इस संकल्प के कारण ही मैं पर्वत के समान अडिग हूँ। दयानन्द में यही संकल्प तो था जिसके आधार पर यह विश्वव्यापी पाखण्ड से भिड़ गया। पाखण्डियों के सामने अड़ गया। जानते हो, सत्य का उपासक, सत्य पर आरूढ़ व्यक्ति किसी की सहायता पर निर्भर नहीं रहता। वह संकटों से, दुष्टों से हत्यारों से भी नहीं घबराता। वह अपने पथ पर अडिग होकर स्थिर गति से बढ़ा चला जाता है। किसके सहारे? उसी विश्वव्यापिनी शक्ति के सहारे जिसे हम परमेश्वर कहते हैं। दयानन्द ने यही किया। संसार का बड़े से बड़ा प्रलोभन, बड़े से बड़ा भय उस निर्भीक मस्त योगी को अपने मार्ग से नहीं हटा सका क्योंकि वह इस समस्त कार्य को अपना नहीं अपितु परमेश्वर की आज्ञा मानकर कर रहा था। ऐसा था, तभी तो अन्तिम समय में आज दीपावली के अन्तिम समय में वह शान्ति से कह सका 'हे दयामय ईश्वर तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। तेरी अद्भुत लीला है।'

यह उस योगी का स्वरूप था। वह एक जाज्वल्यमान प्रकाश पुञ्ज था जो अभी भी हमें प्रकाश प्रदान कर रहा है। हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहा है। मैं तो एक छोटा सा दीपक हूँ किन्तु मुझे गर्व है कि मैं उसी ऋषि के मार्ग पर चल रहा हूँ। यह विश्वव्यापी अन्धकार दूर हो सके, मैं इसलिए तो जल रहा हूँ। अब कहो, तुम्हें मेरा कार्य कैसा लगा। मेरा व्रत कैसा लगा। दीपक? तुमने तो मेरी आंखें खोल दी। तुम छोटे नहीं हो, अकेले नहीं हो। तुम्हारा अडिग, महान संकल्प तुम्हारे साथ है। तुम दीपक नहीं, प्रकाश पुञ्ज हो। तुम्हें प्रणाम।

दयानन्द! तुमने भी तमसो मा ज्योतिर्गमय का अनुसरण करके संसार को प्रकाश देना चाहा। इसके लिए तुमने सब कुछ सहन किया। अपने जीवन को, अपने शरीर को भी 'इदन्नमम' कह दिया। तुमने अज्ञान अन्धकार को मिटा कर प्रकाश फैलाने के लिए अपने जीवन को भी स्वाहा कर दिया। यह सब व्यर्थ नहीं गया। प्रकाश, सत्य का प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश, न केवल भारत में ही, अपितु विदेशों में भी खूब फैला किन्तु एक प्रश्न मैं तुमसे ही पूछता हूँ कि वह प्रकाश अब मन्द क्यों होता जा रहा है। क्यों सिकुड़ता जा रहा है। शायद तुम इसका उत्तर दे सको। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ - प्रकाश पुञ्ज तुम्हें प्रणाम।

- बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली-34

देव दयानन्द बनो विश्व को आर्य बनाओ

– पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य भजनोपदेशक

जगत गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देश भक्त धर्मात्मा, थे वैदिक विद्वान।।
थे वैदिक विद्वान, तपस्वी थे ऋषि त्यागी।
मानवता के पुंज, निराले थे वैरागी।।
किया विश्व कल्याण, सन्त थे परोपकारी।
मान रही है देव, उन्हें अब दुनियां सारी।।
भूल गया है वेद पथ, फिर सारा संसार।
पाखंडियों की हो गई, दुनिया में भरमार।।
दुनियां में भरमार, नित्य झगड़े होते हैं।
विधवा, दीन, अनाथ, रात–दिन अब रोते हैं।।
लाखों गऊएं सुनों! नित्य जाती हैं मारी।
मनमानी कर रहे, कुकर्मी अत्याचारी।।
देती है दीपावली, हमें साफ सन्देश।
जागो प्यारे आर्यों! काटो कष्ट क्लेश।।
काटो कष्ट क्लेश, वेद प्रचार करो तुम।
वीर साहसी बनो, जगत की पीर हरो तुम।।
करो धर्म के काम, उठो! कर्त्तव्य निभाओ।
ऋषिवर का है कर्ज, आर्यों! उसे चुकाओ।।
सुख पाओगे आर्यों! दूर भगाओ फूट।
जहाँ फूट होती वहाँ, याद रखो तुम लूट।।
याद रखो तुम लूट, प्रेम रसधार बहाओ।
देव दयानन्द बनो, विश्व को आर्य बनाओ।।
मानवता लो धार, बड़ा आदर पाओगे।
''नन्दलाल'' कह, अमर जगत में हो जाओगे।।

आर्य सदन, ग्राम बहीन, जनपद–पलवल (हरि.)

निराले ऋषि की निराली दीवाली

– डॉ. महेश विद्यालंकार

vlrks ek lnxe;] relks ek T;ksfrxZe; eR;ksekZ·ere~xe;A

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। असत्य से सत्य, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृतत्व, पाप से पुण्य, शरीर से आत्मा और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलने का प्रेरणा पर्व है। आज बहिर्जगत में रोशनी, चमक, दमक, भौतिक उन्नति प्रगति, सुख साधन आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। अन्तर्जगत में अन्धकार जड़ता, अशांति, असंतोष, इच्छाएं, वासनाएं, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि का अंधेरा तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह पर्व प्रतिवर्ष ज्ञान रूपी प्रकाश लाने व फैलाने का अमर सन्देश देने आता है। यदि जीवन जगत को सुखी, शान्त, संतुष्ट और सर्वे भवन्तुः सुखिनः बनाना है तो सत्ज्ञान की आंखें खोलकर जीओ व चलो। तभी संसार में विश्व शांति, विश्वबन्धुत्व तथा विश्वमानवता की बृष्टि, विचार एवं भावना आ सकेगी।

दीपावली का पर्व आर्य समाज के इतिहास में प्रेरक स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषिवर देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमरबेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप, त्याग, तपस्या, सेवा उपकारों योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति दिवस है। युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा बेला है। वह देव पुरुष जाते–जाते भी असंख्य ज्ञान दीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन दृष्टि दे गया। उसी मुक्तात्मा की अमर कहानी दीवाली हर वर्ष दुहराने आती है। ऐसी देवात्माएँ दुनिया में कभी–कभी आती है। प्रभु की इच्छा से आती है और उसी की इच्छा में अपनी इच्छा को पूर्ण मानकर विदा हो जाती है। ऋषिवर का जीवन भी निराला था और दीवाली भी निराली थी। ये प्रेरक पंक्तियां सत्य हैं :–

lfn;ksa rd bfrgkl u le> ldsxk]
rqe ekuo Fks ;k ekuork dh egkdkO;A

आर्य समाज ऋषि का जीवन्त स्मारक है। ऋषि का समग्र जीवन दर्शन, मन्तव्य, विचार, सिद्धान्त, उद्देश्य, आदर्श आदि आर्य समाज को वसीयत, विरासत तथा परम्परा में मिलें। इन्हीं का प्रचार–प्रसार एवं पालन करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। जितना आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार–प्रसार और अनुयायी बढ़ेंगे, उतने स्वामी दयानन्द अमर होंगे। आज हम आर्यों के समक्ष ऋषि दयानन्द, आर्य समाज और सिद्धान्तों की रक्षा व प्रचार का ज्वलन्त प्रश्न खड़ा हुआ है। यदि इस पर सब मिलकर गम्भीरता पूर्वक ईमानदारी, त्याग भाव, सेवाभाव आदि की दृष्टि से चिन्तन–मनन, क्रियान्वयन नहीं करेंगे तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। यदि ऋषि को जीवित जागृत व अमर रखना है तो आर्य समाज को अपने सत्य स्वरूप को पहचानना होगा। ऋषि दयानन्द ने जीवन भर नाम, यश, सुख, आराम आदि के लिए न चाहा न मांगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मंदिर, स्मारक गद्दी आदि नहीं बनाई। वे रातों में जागकर जीवन जगत में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, पाप, अधर्म, अन्धविश्वास आदि के लिए घण्टों करुणक्रन्दन किया करते थे। ge jkr dks mBdj jksrs gq] tc lkjk vkye lksrk gSA यह पीड़ा ऋषि की थी। वह युग पुरुष सारा जीवन जहर पीता रहा, पत्थर सहता रहा, गालियां विरोध सुनता रहा। बदले में संसार को दया और आनन्द लुटाता रहा। वह सत्य का पुजारी जीवन भर असत्य, अधर्म, गुरुडम मूर्तिपूजा अवतारवाद तथा वेद विरुद्ध बातों से अकेला लड़ता रहा, कभी गलत बातों से समझौता नहीं किया। सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, अर्थ व पद लोभ नहीं आने दिया। वह दिव्यात्मा हर पहलू से खरा ही उतरा। उनके कट्टर विरोधी आलोचक भी अन्दर से प्रशंसक ही रहे। वह देवपुरुष उनसठ साल के डेपुटेशन पर संसार में आया था। घोर अविद्या में डूबी मानव जाति को वेदपथ और सन्मार्ग दिखाकर चला गया। सच तो यह है कि दुनिया ने ऋषि को समझा, जाना और माना ही नहीं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

दीवाली पर समस्त आर्य समाज व ऋषि भक्त ऋषि की स्मृति को निर्वाणोत्सव के रूप में मनाते हैं। निर्वाण शब्द मुक्त होना, आगे बढ़ जाना और बुझ जाने के अर्थ में आता है। अजमेर के भिनाई भवन में अन्तिम समय में ऋषिवर शान्तभाव से लेटे थे। सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। वह महायोगी अनुभव कर रहा था। आज प्रयाण बेला है। पूछा आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है? भक्त ने कहा आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीवाली का पर्व है। पूरे शरीर पर भयंकर फफोले थे। फिर भी उनका मुख मण्डल शान्त व प्रसन्न था। सबको संगठित होकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। थोड़ी देर बाद बोले सभी खिड़कियां दरवाजे खोल दो। प्रार्थना, मन्त्रपाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्त भाव में मुख से उच्चरित होने लगा – हे दयामय सर्वशक्तिमान परमेश्वर। तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अदभुत तेरी लीला है। यह कहकर लम्बी श्वास खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा देवता अपनी इहलीला समाप्त कर प्रभु की शरण में चला गया। सभी भक्त जन असहाय होकर देखते रहे। पं. गुरुदत्त जी पहली बार ऋषि के दर्शन करने आये थे। ईश्वर पर उनकी दृढ़ आस्था नहीं थी। ऋषि की अन्तिम यात्रा के अपूर्व दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त पक्के ईश्वर विश्वासी आस्तिक बन गये। उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन ऋषि मिशन के लिए समर्पित कर दिया। जाते–जाते भी ऋषि गुरुदत्त जी को ईश्वर विश्वास का सन्देश दे गए। ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक व शिक्षाप्रद था, मृत्यु भी प्रेरक बनी। दीवाली पर प्रभु भक्त योगी का विदा होना, सन्देश दे रहा है – वेद ज्ञान की ज्योति को जलाये रखना और आर्य समाज को आगे बढ़ाते रहना। संसार के इतिहास में मृत्युंजयी ऋषि ऐसे थे जो होश में तिथि पूछकर, स्नान प्रार्थना करके, प्रभु का स्मरण धन्यवाद करते हुए अपने विषदाता को क्षमादान देकर प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए गए। ऐसी अदभुत, चमत्कारी प्रेरक मृत्यु निराले मुक्तात्मा को ही सौभाग्य से मिलती है। ऋषिवर! तुम धन्य हो। तुम्हारा तप, त्याग सेवा भरा आजीवन संघर्षपूर्ण इतिहास स्वर्णिम व प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार व योगदान स्मरणीय व वन्दनीय है। तुमने न जाने कितने जीवन पथ में भटके हुए लोगों को नव जीवन दिया। तुमने भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा। जिसने तुम्हें देखा, सुना, पढ़ा और जो सम्पर्क में आया वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम सत्य के अन्वेषक वक्ता, पुजारी, प्रचारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। तुम्हारा दूसरा पर्याय और कोई भी नहीं हुआ।

दीवाली ऋषि स्मृति पर्व है। उस महामानव के उपकारों, योगदानों, महत्त्व विशेषताओं आदि को स्मरण व कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्य तिथि है। संकल्प लेने दुहराने और अपने सुधारने की मंगल बेला है। ऋषि भक्तों आर्यों! उठो! जागो आंखें खोलो। अपने स्वरूप को पहिचानों। अन्तस में ज्ञानदीप जलाओ। प्रतिवर्ष परम्परागत दीवाली आती है। हम आर्यजन भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाते हैं। मेला लगता है। भाषण होते है, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझ लेते हैं। सोचो! क्या निर्वाणोत्सव की यही मूल चेतना, सन्देश व भावना है।? ये पर्व, जयंतियां उत्सव, वेद कथाएं, यज्ञ सम्मेलन आदि हमें जगाने, संभालने आत्मबोध व सत्यबोध कराने आते हैं। और दृष्टि, सोच, विचार व ज्ञान देते हैं। क्या खोया, क्या पाया। कहां के लिए चले थे, कहां जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों, आदर्शों विचारों सिद्धान्तों व नवजागरण के लिए जीवन बलिदानी ऋषि ने आर्य समाज बनाया था? जो हमें कर्त्तव्य व जिम्मेदारी सौंपी थी। ऋषि श्रद्धांजलि और ज्योति पर्व हमसे पूछ रहा है। उन कार्यों के लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या हमारा जीवन आर्यत्व पूर्ण है? कुछ नहीं किया तो कुछ करने का विचार संकल्प व व्रत लें। जब जाग जाओ, तभी सबेरा है। ऋषि भक्त आर्य समाज अनुयायी कहलाना है तो उनके बताए रास्ते पर चलो। यह ऋषि स्मृति का प्रकाश पर्व कह रहा है अपने अन्दर के व्यर्थ के अहंकार स्वार्थ ईर्ष्या, द्वेष पद प्रतिष्ठा आदि के अज्ञान को ज्ञान विचार विवेक से हटाओ, मूल में भूल हो रही है। व्यर्थ के विवादों झगड़ों समस्याओं आदि में समय शक्ति धन व सोच को मत लगाओ। आर्य समाज के पास बहुत बड़ी विचार सम्पदा है। उसको संभालों। तभी ऋषि निर्वाणोत्सव की सार्थकता, उपयोगिता तथा सच्ची ऋषि श्रद्धांजलि होगी।

ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त आर्यजनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण हार्दिक शुभकामनाएँ।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण, समस्त आर्यो के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलने तथा संगठित होने की सर्वोच्च प्रेरणा बनें, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

स्वामी आर्यवेश	प्रो. विट्ठलराव आर्य	पं. माया प्रकाश त्यागी
सभा प्रधान	सभा मंत्री	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रश्न! ऋषि दयानन्द क्या थे?
सुधारक थे? यथास्थितिवादी थे? अथवा क्रान्तिकारी थे?

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द उन्नीसवीं शताब्दी के महापुरुष थे। उस युग में उनके सिवाय बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब आदि प्रान्तों में अन्य अनेक महापुरुष उत्पन्न हुए थे। सर्वाधिक महापुरुष बंगाल ने दिये। इनमें राजा राममोहनराय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर परमहंस रामकृष्ण तथा स्वामी विवेकानन्द आदि के नाम स्मरणीय हैं। गुजरात ने यदि दयानन्द सरस्वती को पैदा किया तो महाराष्ट्र में समाज सुधार के क्षेत्र में योगदान करने वाले महादेव गोविन्द्र रानाडे जन्मे। प्रश्न यह है कि क्यों न हम इस महापुरुष को 1. सुधारक, 2. सुधारक यथास्थितिवादी (जैसा है वैसा चलने दें अपरिवर्तन के हामी) तथा क्रान्तिकारी (आमूल चूल परिवर्तन के पक्षपाती) इन वर्गों में बांटकर यह पता लगायें इनमें दयानन्द किस वर्ग में आते हैं?

स्पष्ट है कि सुधारक लोग धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्र के क्षेत्र में आई विकृतियों, विडम्बनाओं तथा बुराइयों को दूर कर वहां स्वच्छ, शालीन, लोकहितकारी व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं। सुधारक धर्म के नाम पर प्रचलित ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास, व्यर्थ के कर्मकाण्ड आदि को दूर कर इसलोक तथा परलोक में उन्नति करने का लक्ष्य निर्धारित करता है। वह समाज में पैदा हुई कुरीतियों, जड़ता विषमता तथा शोषण को समाप्त कर सामाजिक समता का इच्छुक होता है।

इसके विपरीत यथा स्थितिवादी धर्म और समाज में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोधी होता है। वह गतानुगति का पोषक होता है। वह इन क्षेत्रों में कोई अवनति बुराई तथा विकृति को नहीं देखता, यदि देखता भी है तो उससे आंखें मूंदे रखता है। उसे प्रचलित रुढ़ियों, पाखण्डों और अंधविश्वासों में कोई बुराई दिखाई नहीं देती। इसके विपरीत वह ऐसे पाखण्डों और अंधविश्वासों के औचित्य को स्वनिर्मित हेत्वाभासों तथा शब्दाडम्बर पूर्ण व्याख्याओं से सत्य और आचरणीय बताता है। इन दोनों वर्गों से भिन्न क्रान्तिकारी हैं। वह अज्ञान, अविद्या, अंधश्रद्धा, ढोंग, पाखण्ड तथा अंधविश्वास से किंचित मात्र समझौता या सहयोग नहीं करता। इन बुराइयों को जड़ मूल से नष्ट कर एक बुद्धि प्रधान धर्म तथा समानता युक्त समाज के निर्माण का इच्छुक होता है। ऐसे क्रान्तिद्रष्टा समाज में कम मिलते हैं।

इन कसौटियों पर यदि उक्त महापुरुषों के कार्य एवं विचारों की परीक्षा करें तो हम यह कहेंगे कि राम मोहन राय, केशवचन्द्रसेन, विद्यासागर तथा रानाडे सुधारक वर्ग के महापुरुष थे। परमहंस रामकृष्ण उनके शिष्य विवेकानन्द तथा महाराष्ट्र के अग्रणी नेता बाल गंगाधर तिलक यथा स्थितिवादी, सुधार कार्य के विरोधी तथा जैसा चलता है वैसा चलने दें के समर्थक थे। दयानन्द क्रान्तिकारी थे वे धर्म समाज तथा राष्ट्र ही नहीं अखिल समग्र मानवता में एक नवीन क्रान्ति चेतना लाकर परिवर्तन को लाना चाहते थे। सुधारक वर्ग हमारे लिए वंदनीय है। राममोहन राय का धर्म एवं समाज के क्षेत्र में किया गया सुधार कार्य सर्वथा, सर्वदा अभिनन्दनीय है और रहेगा। उन्होंने नारी के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। सती दाह, विधवा उत्पीड़न सामाजिक विषमता, पुरोहित वर्ग की तानाशाही जन्माधारित वर्ण–व्यवस्था का विरोध किया। धर्म के क्षेत्र में एकेश्वरवाद का समर्थन वेदों एवं उपनिषदों आदि सत्य शास्त्रों को स्वीकार करना, प्रतिमा पूजन, प्रतीक पूजन आदि से उत्पन्न धार्मिक अंधविश्वासों का प्रबल खण्डन उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उज्ज्वल पहलू हैं। राममोहन राय के सुधार कार्य को केशव चन्द्र ने आगे तो बढ़ाया किन्तु ईसाई चिन्तन से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण वे राष्ट्रीय धारा के मूल प्रवाह से दूर चले गये। इसके विपरीत ईश्वरचन्द्र विद्यासागर यद्यपि सनातनी पण्डित थे। किन्तु विधवाओं के पुनर्विवाह का कानून 1856 में बनवाने तथा स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन करने के कारण वे तत्कालीन बंगाली सुधारकों में महत्त्वपूर्ण माने गये। महादेव गोविन्द रानाडे की सुधार कार्य में दिलचस्पी उनके गुरु स्वामी दयानन्द की प्रेरणा को माना जा सकता है। यही कारण है कि उन्होंने कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों के साथ–साथ समाज सुधार सम्मेलनों का नियमित आयोजन किया तथा कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय चिन्ता के साथ–साथ समाज सुधार के कार्य को भी महत्त्व दिया।

यथा स्थितिवादी (स्थिति स्थापक) वर्ग का मानना था कि धर्म और समाज, यहां तक कि राष्ट्र के क्षेत्र में जो विकृतियाँ बुराइयाँ आ गई हैं, उनकी ओर दृष्टि मत डालो जो जैसा है वैसा चलने दो। श्री रामकृष्ण तो समाज में आई बुराइयों के प्रति सदा आँखें मूंदे रहे और स्वामी विवेकानन्द अपने वाक् चातुर्य वाक् पटुता तथा तर्क क्षमता से बाल विवाह का समर्थन तथा विधवा पुनर्विवाह का विरोध करने से नहीं चूके। (विस्तार के लिए देखें मेरा लिखा ग्रन्थ स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द तुलनात्मक अध्ययन)।

ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व में सुधारक तथा क्रान्तिकारी दोनों को देखा जा सकता है। विचारक एवं इतिहासकार उन्हें अपने युग का सर्वोपरि सुधारक स्वीकार करते हैं। धर्म, समाज, राष्ट्र और निखिल मानवता में आई विकृतियों को दूर करने के उनके प्रयास सर्व विदित हैं, सर्व स्वीकार्य हैं। केवल समाज सुधार की ही चर्चा करें तो हिन्दू समाज में व्याप्त बाल विवाह, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा उत्पीड़न, अछूत समस्या, नारी शिक्षा का विरोध आदि शतशः सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करने में उनके प्रयास उन्हें महान सुधारक सिद्ध करते हैं। उनका क्रान्तिकारी होना इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि उन्होंने सर्वथा निर्मल होकर तथा बिना किसी लाग लपेट किये पाखण्डों एवं अंधविश्वासों पर कठोर प्रहार किये तथा उनका उन्मूलन किया।

उन्होंने धर्म को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया और उसे मतमतान्तरों से पृथक बताया। उनकी दृष्टि में मनुष्य वह है जो मननशील होकर पक्षपात रहित आचरण करता है। प्राणि मात्र तथा विशेषतः मनुष्य मात्र के लिए दया, करुणा सदभाव तथा प्रेम का उपदेश तो अनेक महापुरुषों ने दिया, किन्तु अन्यायकारी अधर्मात्मा तथापि बलवान का नाश, अवनति तथा उनके प्रति अप्रियाचरण करने का आदेश क्रान्तिकारी दयानन्द का ही था। उनके पूर्व से व्यास, बाल्मीकि, चाणक्य, समर्थ रामदास आदि की भी यही शिक्षा थी। ये सभी क्रान्तिकारी थे।

परमहंस रामकृष्ण की कथित धार्मिक सहिष्णुता तो और भी विचित्र थी। वे विभिन्न मतों के मूल नैतिक उपदेशों की एकता के समर्थन के साथ उनके उचित अनुचित क्रिया काण्डों तथा आचरणों का समर्थन करने से भी नहीं चूकते थे। सर्व धर्म समभाव का अर्थ उनके लिए यह था कि वे एक मुसलमान की भांति नमाज पढ़ें, रोजा रखें तथा मांसाहार को भी स्वीकार कर लें। उन्होंने शायद यह समझने की भूल की थी कि मांसाहार इस्लाम का कोई नितान्त अनिवार्य पहलू है, जबकि ऐसा है नहीं।

अपनी तर्क पटुता तथा व्याख्यान कौशल के बल पर स्वामी विवेकानन्द ने सुधारक वर्ग (मुख्यतः ब्रह्मसमाज, यत्र–तत्र आर्य समाज) पर भी प्रच्छन्न सूक्ष्म प्रहार किये। (विस्तार के लिए मेरा उक्त ग्रन्थ द्रष्टव्य है) **मूर्तिपूजा के पाखण्डपूर्ण कृत्यों का निर्लज्ज समर्थन, मांसाहार का अनुचित पक्षपात यहां तक कि सामाजिक राजनीति में देशभक्त, क्रान्तिकारियों को समर्थन न देकर विदेशी सत्ता के प्रति पक्षपात करने तथा स्वयं को राजभक्त घोषित करने जैसे प्रसंग उनके जीवन में मिलते हैं।** तिलक महाराज तो सुधारक वर्ग के प्रतिनिधि म. गो. रानाडे के घोषित विरोधी थे। जब सरकार ने (एज आफ कन्सेंट बिल सहवास की अनुमति का बिल (वयस्क होने पर ही पुरुष को स्वपत्नी से संभोग करने का अधिकार देना) पास कराना चाहा तो तिलक ने इसका विरोध इस आधार पर किया कि विदेशी सरकार को हमारे सामाजिक नियमों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है और जब हम स्वतंत्र होंगे तो अपना सुधार स्वयं कर लेंगे। दूसरे शब्दों में सुधार कार्य को खटाई में डालना ही तिलक का लक्ष्य था। यदि यथास्थिति वादियों की चलती रहे तो हमारा धर्म तथा समाज मध्यकालीन जड़ता से कभी भी नहीं उबर सकेगा।

यथा स्थितिवादियों ने पुरातन अनावश्यक तथा युक्ति तर्क सहित प्रथाओं के पक्ष में हास्यास्पद तर्क प्रस्तुत कर उनका औचित्य सिद्ध करना चाहा। उदाहरणार्थ देवताओं की प्रस्तर मूर्तियों की अर्चना में प्रयुक्त चरणामृत पान (पत्थर के देवता पर चढ़ाये तथा उसे सिंचित करने वाले जल, दूध, दही आदि का पेय) को प्रसाद रूप में ग्रहण करने के प्रश्न में वे युक्ति देते हैं कि चरणामृत में विभिन्न धातुओं से निर्मित मूर्तियों के वे रासायनिक तत्त्व समाविष्ट हो जाते हैं अतः यह चरणामृत (वस्तुतः दूषित हानिकर जल) पान शरीर के लिए रोग नाशक होता है। इस प्रकार की विचित्र एवं तर्कहीन व्याख्याओं को पेश करने में थियोसीफिकल सोसाइटी वाले भी थे।

ऋषि दयानन्द सुधारक तथा साथ ही क्रान्तिकारी थे

ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व में सुधारक तथा क्रान्तिकारी दोनों को देखा जा सकता है। विचारक एवं इतिहासकार उन्हें अपने युग का सर्वोपरि सुधारक स्वीकार करते हैं। धर्म, समाज, राष्ट्र और निखिल मानवता में आई विकृतियों को दूर करने के उनके प्रयास सर्व विदित हैं, सर्व स्वीकार्य हैं। केवल समाज सुधार की ही चर्चा करें तो हिन्दू समाज में व्याप्त बाल विवाह, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवा उत्पीड़न, अछूत समस्या, नारी शिक्षा का विरोध आदि शतशः सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करने में उनके प्रयास उन्हें महान सुधारक सिद्ध करते हैं। उनका क्रान्तिकारी होना इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि उन्होंने सर्वथा निर्मल होकर तथा बिना किसी लाग लपेट किये पाखण्डों एवं अंधविश्वासों पर कठोर प्रहार किये तथा उनका उन्मूलन किया।

इस कठोर कर्त्तव्य के निष्पादन में उन्होंने न तो पक्षपात किया और न पूर्वाग्रह से काम लिया। अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में वे क्रान्ति का शंखनाद करते हैं। अनार्ष ग्रन्थों को शास्त्र कोटि से पृथक करना, यज्ञीय हिंसा तथा उसका विधान करने वाले ब्राह्मण तथा सूत्र ग्रन्थों में पाये जाने वाले ऐसे अंशों को एक प्रहार में अप्रामाणिक घोषित करना मूर्तिपूजा अवतारवाद मृतक श्राद्ध, जलाशयों को मोक्ष दायक मानना जैसे धार्मिक पाखण्डों तथा उनके आनुषंगिक मन्तव्यों मंदिरों में होने वाले अनाचार आदि पर तीव्र प्रहार करने में उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। उनका यह क्रान्तिकारी रूप व्यक्ति, परिवार समाज तथा राष्ट्र सभी क्षेत्रों में प्रसारित हुआ था। उन्होंने प्रगति तथा स्वस्थ परम्पराओं के पालन में समन्वय स्थापित किया। धर्म और विज्ञान को परस्पर अविरोधी सिद्ध किया तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों का लाभ लेने की वकालत की।

उन्होंने धर्म को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया और उसे मतमतान्तरों से पृथक बताया। उनकी दृष्टि में मनुष्य वह है जो मननशील होकर पक्षपात रहित आचरण करता है। प्राणि मात्र तथा विशेषतः मनुष्य मात्र के लिए दया, करुणा सदभाव तथा प्रेम का उपदेश तो अनेक महापुरुषों ने दिया, किन्तु अन्यायकारी अधर्मात्मा तथापि बलवान का नाश, अवनति तथा उनके प्रति अप्रियाचरण करने का आदेश क्रान्तिकारी दयानन्द का ही था। उनके पूर्व से व्यास, बाल्मीकि, चाणक्य, समर्थ रामदास आदि की भी यही शिक्षा थी। ये सभी क्रान्तिकारी थे।

– 315 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

When Will You Came Next?

The day was bright
the darkness falls
in the evening when
a great soul, being enlightened,
came up to show a show
of life, to bid farewell
to the world murmuring
with an unique glow on his face
the onlookers so sad over the
demise, crying oh no! you
must not go, stay, stay for
long, why in so hurry.
Darkness of ignorance is still
Oh! light of the vedas,
Leave us not so hurry
Hundreds and thousands after
you came up on the earth.
When will you come next?

- B. R. Sharma 'Vibhakar'
52/2, Lal Quarter, GZB-201001
Mob. :-9350451497

तमसो मा ज्योतिर्गमय

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

दीपावली प्रकाश से अंधकार को मिटाने वाला पर्व है। यह एक प्रतीक है जिसका अर्थ है भीतर और बाहर के अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी प्रकाश से मिटाने का अहर्निश प्रयास करना। भीतर और बाहर के अंधकार से क्या तात्पर्य है? भीतर के अंधकार का अर्थ काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, हिंसा, असत्य, अन्याय आदि दुर्गणों से है जो मनुष्य के मन, वचन, कर्म को कलुषित किये रखते हैं। बाहर के अंधकार का अर्थ साम्प्रदायिकता, जातपात, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, नारी उत्पीड़न, असमानता, क्षेत्रीयतावाद, भाषावाद, दहेज प्रथा, बाल–विवाह, असमानता, मिलावटखोरी, बलात्कार, अपहरण, आतंकवाद, अपराधवृत्ति, सती–प्रथा, देवदासी प्रथा, बाल–मजदूरी, बन्धुआ मजदूरी, तस्करी आदि सामाजिक बुराइयों से है जो समाज को भयभीत, आतंकित, विश्रृंखलित, अव्यवस्थित, शोषित और प्रदूषित किये रखती हैं।

दीपावली पर्व से महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमिट स्मृति जुड़ी हुई है। इसी दिन अन्धकार से लड़ते–लड़ते ऋषिवर ने प्राणों का त्याग किया था और उनका आत्मा दीपावली के दिव्य प्रकाश में ही कहीं विलुप्त हो गया था। बाहर के अन्धकार को तब तक नहीं मिटाया जा सकता जब तक कि मनुष्य अपने भीतर के अन्धकार, तमस और कलुषता को नहीं मिटाता। अन्तर्जगत् का परिशोधन होने पर ही मनुष्य में वह स्फुर्ति, क्षमता, चेतना, निर्भयता, स्थिरता आती है जो बाहर के अंधकार को मिटाने के लिए अत्यावश्यक है। जिसे इच्छा–शक्ति कहा जाता है, संकल्प की सात्विक अग्नि कहा जाता है, तीसरे नेत्र का खुलना कहा जाता है अथवा छठी इन्द्री जगने की बात कही जाती है तो ये सब परिशोधित अन्तर्जगत की ही स्वाभाविक प्रक्रियाएँ हैं। मनुष्य इस स्थिति को प्राप्त करके ही आत्म प्रेरणा से समाज सेवा के पथ का पथिक बनता है। आज का समाज विषमताओं से परिपूर्ण है, भौतिकवादी और बाजरवादी सोच के कारण मनुष्य जीवन में धन ने सर्वोपरि स्थिति प्राप्त कर ली है, रिश्तों का अब विशेष महत्व नहीं रहा है, धर्म और शिक्षा जैसे बुनियादी व पवित्रतम क्षेत्रों में भी आज पैसे का बोलबाला है। यह दयनीय स्थिति मनुष्य के अन्तर्जगत की कलुषता का प्रतिबिम्ब मानी जा सकती है।

समाज–सुधार का कोई ठोस कार्यक्रम लेकर कोई भी संगठन आज सक्रिय नहीं है। सक्रियता यदि कहीं नज़र आ भी रही है तो इसकी आड़ में धन अर्जित करने की मंशा है। देश भर में समाज–सेवा के नाम पर एन०जी०ओ० बने हुए हैं जो बेरहमी से सरकारी धन पर हाथ साफ कर रहे हैं। अधिकांश एन०जी०ओ० सत्तारूढ़ पार्टी के चहेतों द्वारा स्थापित होते हैं जो कमीशन के आधार पर अर्थात् बन्दरबांट के आधार पर काम करते हैं। काम न करने वाले अर्थात् फर्जी एन०जी०ओ० की भी भरमार कम नहीं है। घर के बन्द दरवाजे पर एक तख्ती लटका कर राजकोष से धन वसूला जाता है। जो समाज–सेवी संगठन वर्षों, दशकों तथा शताब्दी से काम करते आ रहे हैं सरकारें उन्हें घास नहीं डालतीं क्योंकि उनका काम करने का ढंग दूसरा है, उनके मानदण्ड दूसरे हैं, उनके दृष्टिकोण दूसरे हैं वे राजकोष पर बोझ बनने की मानसिकता से मुक्त हैं। ये संगठन मिशनरी भावना से काम करते हैं न कि प्रदर्शन करने अथवा धन बटोरने की गर्ज से। ये संगठन समाज की बुनियाद को मजबूत करने का काम करते हैं, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध सतत अभियान चलाते हैं और कई बार इस संघर्ष में उसके अनुयायी अपने जीवन का बलिदान तक दे देते हैं। लेकिन अब मिशनरी भावना से चलने वाले इन संगठनों की बुनियाद भी हिलने लगी है क्योंकि इनमें भी बाजारवादी सोच के लोग आ घुसे हैं। शहद पर मक्खियों का भिनभिनाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मक्खियों की संख्या जब किसी समाजसेवी संगठन में बढ़ जाती है तो भीतर ही भीतर अनेक चुनौतियाँ उस संगठन को मिलने लगती हैं। अनेक पुराने समाजसेवी संगठन इन चुनौतियों के विषदंश आज झेल रहे हैं जिससे उनकी गतिविधियाँ ठप्प हो रही हैं और उनके यश में निरन्तर ह्रास हो रहा है। इन मक्खियों के नियंत्रण व प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था न होने से समस्या और जटिल बनती जा रही है। आर्यसमाज भी इन समाज सेवी संगठनों में से एक है।

दीपावली उल्लास का पर्व है, मंगल का पर्व है, लक्ष्मी का पर्व है लेकिन आर्यों के लिए यह पर्व चिन्ता व चिन्तन का पर्व रहा है। ३० अक्तूबर सन् १८८३ की दीपावली को समूचा भारत ज्योति पर्व मना रहा था लेकिन अजमेर के आर्य–जन

दीपावली पर्व से महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमिट स्मृति जुड़ी हुई है। इसी दिन अन्धकार से लड़ते–लड़ते ऋषिवर ने प्राणों का त्याग किया था और उनका आत्मा दीपावली के दिव्य प्रकाश में ही कहीं विलुप्त हो गया था। बाहर के अन्धकार को तब तक नहीं मिटाया जा सकता जब तक कि मनुष्य अपने भीतर के अन्धकार, तमस और कलुषता को नहीं मिटाता। अन्तर्जगत् का परिशोधन होने पर ही मनुष्य में वह स्फुर्ति, क्षमता, चेतना, निर्भयता, स्थिरता आती है जो बाहर के अंधकार को मिटाने के लिए अत्यावश्यक है। जिसे इच्छा–शक्ति कहा जाता है, संकल्प की सात्विक अग्नि कहा जाता है, तीसरे नेत्र का खुलना कहा जाता है अथवा छठी इन्द्री जगने की बात कही जाती है तो ये सब परिशोधित अन्तर्जगत की ही स्वाभाविक प्रक्रियाएँ हैं। मनुष्य इस स्थिति को प्राप्त करके ही आत्म प्रेरणा से समाज सेवा के पथ का पथिक बनता है।

ऋषि दयानन्द के मृतक शरीर को घेरे बैठे थे। आज के ही दिन सायं छह बजे उन्होंने प्राणों का त्याग किया था अतः अन्त्येष्टि अगले दिन होनी थी। भारत के ज्ञानलोक का सूर्य अस्ताचल में चिर निद्रा में पड़ा था। आर्य जन अपने को असहाय अनुभव कर रहे थे। अपना कोई उत्तराधिकारी छोड़ कर वे नहीं गये थे। चिन्ता का मुख्य कारण यही था कि अब आर्य समाज की बागडोर कौन संभालेगा, उनके मिशन को एक व्यवस्थित रूप देकर कौन चलायेगा। लेकिन इस शोकमय समय में आर्यों के पास एक सम्बल था, एक सहारा था जिससे इस चिन्ता का सहज समाधान निकालना सम्भव हुआ। यह था आर्यों का आत्म–बल, अन्तर्जगत की निश्छल एवं प्राणवान् शक्ति, एक परिशोधित अन्तर्जगत जो सद्गुणों से जाज्वलयमान् था। तब के लोग समाजसेवा को पुण्य कर्म और धर्म मानते थे आज के लोगों की तरह व्यापार या ऐषणाओं का स्रोत नहीं। ऋषिवर का निधन यदि आज हुआ होता तो उनके चेले आर्य समाज की एक–एक ईंट बेच खाते। लेकिन वह युग दूसरा था, ऋषि के निधन ने आर्यों के मन में एक तड़प, एक जज्बा, एक सनक ऐसी भर दी कि देश–विदेश में आर्य समाज का फैलाब तेज गति से होने लगा। शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हँसराज के नेतृत्व में दो महान् आन्दोलन अलग–अलग चले। शास्त्रार्थों की धूम मची, वेद प्रचार की गति बढ़ी, साहित्य प्रकाशन क्षेत्र में क्रान्ति आई, शुद्धि आन्दोलन का सुदर्शन चक्र घूमा, बलिदान देने की होड़ लगी, स्वाधीनता आन्दोलन की अग्नि प्रचण्ड की, हैदराबाद आन्दोलन ने तो सबको चकित कर दिया, समाज सेवा के अनेक प्रकल्प स्थापित किये गये। इस प्रकार आर्य समाज ने अपने को न केवल पुनर्स्थापित किया बल्कि एक आदर्श संस्था के रूप में अपने को अध्यात्म, योग, धर्म, समाज सेवा, शिक्षा, स्वाधीनता, आन्दोलन आदि क्षेत्रों में स्थापित किया, यश अर्जित किया।

आज स्थिति इसलिए विकट है कि दीपावली को आर्यों ने उल्लास पर्व मान लिया है, चिन्तन पर्व नहीं। यदि चिन्तन पर्व माना होता तो वे समस्याएँ कदाचित पैदा न होती जिनसे वह जूझ रहा है। तमसो मा ज्योतिर्गमय का उच्चारण तो यज्ञवेदी पर प्रतिदिन किया जाता है लेकिन भीतर और बाहर के तमस को मिटाने की इच्छा–शक्ति अब जाग्रत नहीं होती। अब तो तमस को जुटा कर, इसे अस्त्र–शस्त्र बनाकर ही विरोधी को परास्त करने के मंसूबे बांधे जाते हैं। झूठ की खड़ग से सत्यवक्ताओं की गरदन कलम करने के षडयन्त्र रचे जाते हैं। मिशन नहीं जब कुर्सी जहन पर हावी हो जाती है तो ऐसा ही होता है। स्वार्थ व्यक्ति को अन्धा कर देता है। इस अन्धेपन से व्यक्ति मुक्त हो सकता है लेकिन जब उसका समूह, उसका ग्रुप, उसका धड़ा, उसका वर्ग ही अन्धेपन का शिकार हो जाये तब आँखें होते हुए भी मनुष्य अन्धेपन का शिकार हो जाता है और चाहने पर, लाख कोशिश करने पर भी वह इससे मुक्त नहीं हो पाता। आर्यसमाज में गुट बनते हैं, फिर ये गुट उप–गुटों में विभजित होते हैं, फिर इन उप–गुटों में लेन–देन होता है, पद बंटते हैं अैर समझौते हो जाते है। कोई नैतिकता, कोई सिद्धान्त, कोई मिशन इन्हें आपस में नहीं बांधता बल्कि बांधते हैं स्वार्थ और पद। ऐसे गठबन्धन फिर शीघ्र ही विभाजन का शिकार बनते हैं, और बिना कोई उद्देश्य प्राप्त किये धराशायी हो जाते हैं। जब भीतर अन्धकार हो, तमस हो, स्वार्थ हो तो बाहर उससे कैसे बचा जा सकता है?

आज के इस यक्ष प्रश्न को, दीपावली को चिन्तन पर्व के रूप में मना कर यदि हल कर लिया जाये तो ऋषि दयानन्द के मिशन को अब भी संभाला जा सकता है, आगे बढ़ाया जा सकता। जरूरत अपने अन्तर्जगत् के परिशोधन की है। यह कार्य यदि ईमानदारी से हो जाये तो बाहर की कोई समस्या रहेगी ही नहीं। किसी गुट विशेष का घटक बन कर अन्तर्जगत् का परिशोधन सम्भव नहीं क्योंकि गुटबाजी खुद में एक ला–ईलाज बीमारी है। जब तक सच बोलने की ताकत हमारे अन्दर पैदा नहीं होगी तब तक हम किसी भी समस्या के समाधान में सहभागी नहीं बन सकेंगे। हमारी प्रतिबद्धता यदि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति है तो गुटबाजी हमें प्रभावित नहीं कर सकती। फिर हमें न तो रणनीति बनाने की जरूरत रहेगी, न कोर्टों पर आश्रित होने की जरूरत पड़ेगी और न किसी नेतृत्व के चरित्रहनन के लिए कोई सामूहिक अभियान चलाने की आवश्यकता महसूस होगी। सही दिशा में बढ़ने वाले और सही काम करने वालों के विरुद्ध भी यदि अभियान चलेंगे तो एक स्थिति ऐसी आ जायेगी कि समूचा संगठन ही एक दिन जमींदोज होकर रह जायेगा। दीपावली के चिन्तन–पर्व पर क्या हम इन मौलिक व आधारभूत बातों पर अन्तर्मुखी होकर चिन्तन कर पायेंगे? ईश्वर हम सबको सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे कि स्थायी समाधान का कोई रास्ता निकल आये और ऋषिवर का मिशन एक बार फिर अपने जलवे बिखेरने लगे।

डोली बना दी तूने

– प्रो. सारस्वत मोहन 'मनीषी'

एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।
वक्त पत्थर पर सफल जौक लगा दी तूने।।
लोग माने या न मानें था करिश्मा, कोई,
अर्थियाँ जितनी चली डोली बना दी तूने।
सच तो ये है कि किया काम निराला ऐसा,
आग पानी में दयानन्द लगा दी तूने।
रात किया दिन को, उड़े ऐसे नशे में नफरत,
जिसका टूटे न नशा ऐसी पिला दी तूने।
जिनके शासन का न छिपता था कभी सूर्य जहाँ,
चलके गुजरात से कुर्सी, वो हिला दी तूने।
दूसरा कृष्ण तुम्हें कहने को मन करता है,
बांसुरी वेद की दुनिया को सुना दी तूने।
ढोंग के दौड़ गये, जितने थे रावण, बसते,
घोर अज्ञान की लंका ही जला दी तूने।
चाँद, सूरज व सितारे थे कभी कैद जहाँ,
ऐसे अंबर में पुनः धूप उगा दी तूने।
जिनके पांवों में न पायल थी न बिंदिया मुख पर,
ऐसी अबलाओं की फिर मांग सजा दी तूने।
ढूंढा इतिहास को देखा न मिला तुम जैसा,
अपने कातिल की भी जीने की दुआ की तूने।
सत्य के दीप सदा दिल में जलाएं रखकर
मरते–मरते भी दीवाली ही दिखा दी तूने।
भूल पायेंगे न सदियों ओ मनीषी! तुमको,
गर्दनें गर्व की पैरों में झुका दी तूने।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदोत्सव समारोह पूर्वक हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया उद्घाटन

वीतराग स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज एवं स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज का मिला सान्निध्य

विश्व आर्य रत्न, प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी ने किया ध्वजारोहण

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. आन्नद कुमार पूर्व आई.पी.एस., आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, आचार्य विष्णुमित्र जी, आचार्य अखिलेश जी योगी, प्रो. सुखदा सोलंकी जी, आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा जी, साध्वी प्रज्ञा जी आदि विद्वानों के अतिरिक्त श्री मानपाल सिंह राठी प्रधान, श्री शत्रुघ्न मौर्य महामंत्री व श्री ओम प्रकाश मलिक कोषाध्यक्ष, एवं श्री गोविन्द सिंह भण्डारी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड, श्री अनिल आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री विजय कुमार आर्य कीरतपुर आदि आर्य नेता व श्री दिनेश पथिक, श्री रूहेल सिंह आर्य (वानप्रस्थ आर्यमुनि एवं श्री रमेश चन्द्र आर्य) भजनोपदेशक कार्यक्रम में पधारे

श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री तपोवन आश्रम रहे कार्यक्रम के मुख्य संयोजक एवं श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी ने संभाला मंच संचालन का दायित्व

उत्तराखण्ड सभा के पूर्व प्रधान श्री सुखवीर सिंह वर्मा (९8 वर्षीय) को किया गया सम्मानित

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरद कालीन वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। 20 से 24 अक्टूबर, 2021 तक आयोजित उक्त उत्सव का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने 20 अक्टूबर, 2021 को महात्मा प्रभु आश्रित सभागार में किया। इससे पूर्व विश्व आर्यरत्न एवं प्रसिद्ध दानवीर आर्य समाज के भामाशाह ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने कर–कमलों से ध्वजारोहण किया, उनके अतिरिक्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं आश्रम के संरक्षक स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज भी ध्वजरोहण में उपस्थित रहे। इन पांच दिनों में चले वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा पद को त्यागमूर्ति स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज ने सुशोभित किया और बीच–बीच में उनके सारगर्भित प्रवचन भी यज्ञप्रेमी आर्यजनों को सुनने को मिलते रहे। स्वामी मुक्तानन्द जी ने यज्ञ के सम्बन्ध में कहा कि जो मनुष्य दैनिक यज्ञ करता है उसके जीवन में किसी पदार्थ का अभाव नहीं होता। यज्ञ करने वाले व्यक्ति की सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं। पांचों दिन प्रातः योग शिविर के माध्यम से वीतराग स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज ने सभी आर्यजनों को योगाभ्यास सिखाया और योग के गूढ़ रहस्यों को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी तपोवन साधन आश्रम के संरक्षक भी हैं। उनका सान्निध्य निरन्तर प्राप्त रहा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर युवा संन्यासी आदित्यवेश जी का आश्रम की ओर से भव्य स्वागत किया गया और युवावस्था में संन्यास की दीक्षा लेने पर उपस्थित आर्यजनों ने उन्हें अपनी ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान की। आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने स्वामी जी को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

अपने उद्बोधन में स्वामी आदित्यवेश जी ने आर्य समाज के गौरवमय इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस देश की आजादी को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज के बलिदानियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। आज उनका इतिहास स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। हमें अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आन्नद कुमार (पूर्व आई.पी.एस.) ने आर्य समाज का सामाजिक उन्नति में योगदान विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए बताया कि चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का विषय हो आर्य समाज ने सर्वाधिक योगदान किया है। आज भी अनेक समस्याएँ हमारे सामने मुँह बाये खड़ी हैं। उन्हें मिटाने के लिए हमें राष्ट्रव्यापी अभियान चलाना चाहिए।

युवा वैदिक विद्वान् आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य ने युवाओं को अधिक से अधिक प्रेरित करने तथा आर्य समाज में दीक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक हम युवावर्ग को आर्य समाज से नहीं जोड़ेंगे, आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित नहीं रह पायेगा।

विश्व आर्यरत्न ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि वे इसी

अगले पृष्ठ पर जारी

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सफलता पूर्वक संपन्न

24 अक्टूबर 2021 को गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में मानव सेवा प्रतिष्ठान व नार्थ अमेरिकन जाट चौरिटी के संयुक्त तत्वाधान में सम्मान समारोह व पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की। अपने विचार रखते हुये आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जीवन मे सफलता की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षा है। यदि आज मनुष्य शिक्षित है तो ही समाज मे आगे बढ़ सकता है। आज हमें शिक्षा के साथ संस्कृति को भी जानना चाहिए। यदि देश को आगे लेकर जाना है तो हमें प्राचीन संस्कृति से जुड़ने की आवश्यकता है।मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आज छात्र व छात्राओं को दिया गया सहयोग सबसे बड़ी सेवा में गिना जाएगा। आप किसी का सहयोग देना चाहते है तो उसे शिक्षा में सहयोग कर दो। इस से उसका जीवन तो बनेगा ही साथ ही वे राष्ट्र निर्माण में भी अहम भूमिका निभाएंगे।

गुरुकुल गौतमनगर के संचालक व वैदिक विरक्त मण्डल के प्रधान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कहा कि केवल अक्षर को समझन लेना ही शिक्षा नही है। बल्कि सर्वांगीण विकास जिस माध्यम से होता हो वो ही शिक्षा है। डॉ.यज्ञवीर शास्त्री ने कहा कि परोपकार को जीवन मे अवश्य धारण करें। जरूरत मंद लोगों की सहायता ही परोपकार कहलाता है।

नार्थ अमेरिकन जाट चौरिटी के प्रधान रामस्वरूप आर्य ने कहा कि प्रतिभाएं आर्थिक तंगी के कारण दब ना जाएं इसलिए ही हमारी संस्था प्रतिभावान छात्र व छात्राओं को सहयोग करती है।यदि भारतीय युवाओं को अवसर व सहयोग मिले तो भारत के विकास में तेजी आएगी।

दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री ने कहा कि हमारा निर्माण यदि वैदिक विचारधारा के आधार पर होगा तो ही हम सही मायने में मनुष्य बन पाएंगे। इनके अतिरिक्त मास्टर रामकुमार गहलोत,आजाद सिंह लाकड़ा, श्री जसवीर मलिक, श्री सहदेव बेधड़क, बहन कल्याणी आर्या, श्री उपेन्द्र आर्या आदि ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने स्वामी आर्यवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अनेक गुरुकुलों विद्यालयों के 120 छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसमें कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक, गुरुकुल लाढ़ौत रोहतक, कन्या गुरुकुल पंचगांवा दादरी, कन्या गुरुकुल नरेला, आर्य अनाथालय दिल्ली, ऋषिकुल विद्यालय गुभाना आदि 25 से ज्यादा शिक्षण संस्थान शामिल थे।

आर्य जगत के विद्वान, संन्यासी, भजनोपदेशक, प्रचारक, गुरुकुलों के आचार्य, आचार्याओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया गया। जिन महानुभावों का अभिनन्द किया गया उनमें सर्वश्री स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी आनन्दवेश जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्रीमती ज्योति आर्या जी, श्री सहदेव बेधड़क जी, श्री वेदपाल आर्य जी, श्री उपेन्द्र जी आर्य, श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार जी, आचार्या सविता जी, प्रियंका आर्या जी, ब्र. अग्निदेव नैष्ठिक जी, बहन कल्याणी आर्या जी, श्री सत्यपाल सरल जी, ब्र. अयन शास्त्री जी, ब्र. हरहर आर्य जी, कु. मुकेश आर्या जी, श्री गंगाराम आर्य जी, श्री सुभाष आर्य जी तथा ब्र. रामफल आर्य जी मुख्य रहे।

नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा भारत के अनेक राज्यो से चयनित 80 जरूरत मंद आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्र छात्राओं को 15 लाख रुपए की छात्रवृत्ति वितरण की गई। इस पुनीत कार्य के लिए मानव सेवा प्रतिष्ठान के आदरणीय रामपाल शास्त्री व उनकी पूरी टीम बधाई के पात्र हैं।

इस कार्यक्रम का संचालन रामपाल शास्त्री ने किया। चन्द्रदेव शास्त्री, सोमदेव शास्त्री, डॉ कवंर सिंह, कमलेश, शीला, अजय शास्त्री, सोमवीर शास्त्री आदि का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ 6 का शेष

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदोत्सव समारोह पूर्वक हुआ सम्पन्न

साधन आश्रम में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं और यहीं से उन्हें यह प्रेरणा मिली कि जीवन में योग साधना से शक्ति प्राप्त करके समाज के उत्थान में लगना चाहिए। आज हमारा समाज विभिन्न कुरीतियों से ग्रसित है जिनके विरुद्ध हम सबको संकल्प के साथ कार्य करना चाहिए, यह समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश को सबसे अधिक खतरा साम्प्रदायिक ताकतों से है और इसके लिए आर्य समाज ही देश को संगठित कर सकता है।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में तपोवन साधन आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा एवं समस्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए इस पांच दिवसीय समारोह की सफलता के लिए शुभकामना प्रदान की। उन्होंने तपोवन साधन आश्रम के पूर्व अध्यक्ष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री को श्रद्धांजलि अर्पित करके स्मरण किया और उनके योगदान की विशेष प्रशंसा की। स्वामी जी ने समाज की उन्नति के लिए आर्य समाज द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि अस्पृश्यता, असमानता, सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण, स्त्रियों के प्रति संकीर्ण मानसिकता, बाल–विवाह, सतीप्रथा, धार्मिक अन्धविश्वास आदि अनेक सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाकर समाज को लम्बे समय तक जागृत किया और उसी के परिणामस्वरूप आज स्त्री शिक्षा, दलितों के अधिकार, सतीप्रथा, बाल–विवाह, महिला उत्पीड़न आदि पर सख्त कानून बने हैं, जिसका श्रेय आर्य समाज को जाता है। यह सर्वविदित है कि जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी तब स्त्रियों एवं शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध था, बाल विवाह एवं सती प्रथा का समाज में प्रचलन था। धर्म के नाम पर भोली–भाली जनता को पण्डे–पुजारी, मुल्ला–मौलवी और धर्म के ठेकेदार लूटते थे। गरीबों का आर्थिक शोषण एवं जातीय अत्याचार निरन्तर जारी था। देश गुलाम था, ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की और उसे यह दायित्व सौंपा की संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य होगा – अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना। आर्य समाज के इस नियम से यह स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का वैश्विक एवं मानवीय दृष्टिकोण उनके कार्यक्रम में संकीर्णता अथवा किसी भी प्रकार के भेदभाव का समावेश नहीं था। आज महर्षि दयानन्द जी के इसी वैश्विक दृष्टिकोण को लेकर हम सभी को पूरे समाज का नेतृत्व करना चाहिए। जो लोग समाज को जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नर–नारी असमानता, गरीब–अमीर अथवा अन्य किसी भेदभाव की दृष्टि से बांटते हैं उनके विरुद्ध सभी अच्छे लोगों को अर्थात् आर्यों को संगठित करना चाहिए और पूरे विश्व में यह संदेश देना चाहिए कि आर्य समाज मानव मात्र के कल्याण के लिए कृत संकल्प है। स्वामी जी ने सभी विद्वानों का भी विशेष अभिनन्दन एवं आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया।

यह कार्यक्रम निरन्तर 24 अक्टूबर, 2021 तक चलता रहा और इसमें विभिन्न विद्वानों, भजनोपदेशकों एवं आर्य नेताओं ने सम्मिलित होकर अपने विचार प्रस्तुत किये। पांच दिवसीय समारोह अत्यन्त उत्साह एवं सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

ज्योति पर्व और वर्तमान भारतीय परिदृश्य

– अवधकिशोर

अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर और असत से सत की ओर सतत अग्रसर होने की श्रेष्ठ और समुज्जवल कामना हम करते हैं, हमारे पूर्व के ऋषि-महर्षियों ने यह श्रेष्ठ ज्ञान का दीप अखण्ड रूप से प्रज्जवलित किया और सद्गुणों के विकास के साथ ही उस ध्येय पथ को अपने जीवन में उतारा भी, साथ ही लोक कल्याण में उसे लगाया। आज जो समाज और राष्ट्र की दुरावस्था है उसे देखकर यह लगता है कि हम भूलते जा रहे हैं कि हम ऋषि-मुनियों की संतानें हैं जिन्होंने हमें श्रेष्ठ ध्येय पथ का दिशादर्शन कराया, आज चारों तरफ यही दृष्टिगोचर होता है कि तम (अन्धकार) का ही साम्राज्य है, तम (अन्धकार) ने उजालों को ही निगल लिया है। दम्भ, झूठ, भय, भ्रष्टाचार और अनाचार ने आसुरी संस्कृति को ही बढ़ावा दिया है जो देव संस्कृति को दिन पर दिन निगलता जा रहा है देश समाज और मानवता की चिन्ता किए बिना सभी अपने स्वार्थ साधना में लगे हैं, भ्रष्टाचार ने देश के विकास को रोक दिया है, झूठ ने सच को पीछे ढकेल दिया है तथा मिलावट ने जीवन के अरोग्यता को नष्ट कर दिया है, प्रकृत प्रदत्त अमृत को भी वह विष में बदल दिया है। पहले लोग कुछ भी गलत करने से डरते थे, उन्हें यह भय था कि उपर वाला देख रहा है। अब छल-प्रपंच और दम्भ में वे सब कुछ भूल चुके हैं, कम से कम समय में सबकुछ पा लेने की चाह और महत्वाकांक्षा उसे कुछ भी करने को मजबूर कर देती है, जो समाज की दशा और दुर्दशा है वही देश की भी है, भ्रष्टाचार और घोटालों ने देश को कंगाल बना दिया है व्यक्ति समाज के सहयोग से आगे बढ़ता है और वहां पहुँचकर वह अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करता है जो जितना बड़ा है, अपनी शक्ति और सामर्थ्य से उसी रूप में समाज देश को नुकसान पहुँचा रहा है। आडम्बरवाद, पाखण्डवाद और स्वार्थवाद ने राष्ट्रवाद को पीछे ढकेल दिया है स्वार्थवाद की विषवेल ने सम्पूर्ण राष्ट्र को जकड़ लिया है, यह इतनी तेजी से फैल चुकी है कि तम (अन्धकार) रूपी दानव का ही साम्राज्य बढ़ रहा है, चिरागों की लव मंद पड़ रही है, मंहगाई ने उसे अपना ग्रास बना लिया है, ज्योति पर्व पर हम दीये के समर्पण से भी सिख नहीं लेते, जिस दीये ने अपने को जलाकर ही हमें प्रकाश दिया है, जिससे चारों तरफ ही खुशियाँ बिखरी हैं। अन्धकार का नाश प्रकाश का प्रभुत्व बढ़ा है।

सरकारें दावा करती हैं महंगाई कम होगी, सबको भरपेट भोजन मिलेगा, लेकिन उसके ठीक विपरीत महंगाई सुरसा के मुख की भांति दिन दूना रात चौगुना बढ़ती ही जा रही है, त्योहारों पर भी उसकी मार स्पष्ट दिख जाती है, जरूरत की अनेक चीजें हमारी पहुँच से बाहर जा रही है, लेकिन सरकार है कि बेसुरा राग अलापे जा रही है, दीवाली में तेल महंगा, बत्ती महंगी, दीया महंगा, दीपक जले भी तो कैसे? आनन्द और खुशियों का त्योहार चारों तरफ ही फीका दिखता है, कभी आज से 70 वर्षों पहले मिली आजादी का सूर्य उगा था, लेकिन इतने लम्बे वर्षों के बाद भी उजाला करोड़ों घरों तक नहीं पहुंचा जनता बेहाल है नेता लोग घोटालें पर घोटालें किये जा रहे हैं। बेईमानी और अराजकता का चारों ओर बोलबाला है कौन पाक साफ है अब यह कहना मुश्किल है आम जनता के हिस्से में तो भय, भूख और बीमारी ही है, उसे सबकुछ ही सहना पड़ता है, वह करें भी तो क्या करें, वह थक हार कुम्भकर्णी नींद सोने को मजबूर है कभी वह जगती है फिर सो जाती है बार-बार जनता ठगी जाती है, उसके नियत में ठगना है बेवकूफ बनाना है आवश्यकता है उसके स्वाभिमान को जगाने की, राष्ट्र के अतीत के गौरव को राष्ट्रवासियों को बताने की। यह भारत भूमि घोटालों और भ्रष्टाचार की भूमि नहीं थी, यह सोने की चिड़िया थी, जहाँ पर दूध-दही की नदियां बहती थी, जहां के लोग प्रकाश के ही पुजारी थे समय की आवश्यकता है जनता एक बार हुंकार कर उठे तो फिर देश का भाग्य चमक उठेगा, तम (अन्धकार) विदीर्ण हो जायेगा चारों तरफ ही प्रकाश का साम्राज्य होगा। भय, भूख, बीमारी से देश मुक्त हो जायेगा। कोई घोटाला और भ्रष्टाचार करने वाला होगा ही नहीं, फिर तो दीप की लव सतत ज्योतित ही रहेगी, माँ भारती अपने सपूतों को बार-बार पुकार रही है, उठो तम (अन्धकार) को विदीर्ण करने हेतु शंखनाद करो। राष्ट्रहित को सर्वोपरि मान स्वार्थहित की तिलांजलि दो तथा ज्योति पर्व के दीपों से प्रेरणा लो। सम्पूर्ण विश्व में भारत देश की जो छवि बन रही है उसे इस देश की जनता जनार्दन ही ठीक कर सकती है, जब तक जनता अपने को दीनहीन और असहाय महसूस करती रहेगी, घोटाले होते रहेंगे। देश लुटता रहेगा और जनता पिटती रहेगी यह स्थिति सम्मानजनक स्थिति नहीं है लूटना और पिटना जो हमारी नियत बन गई है इससे ऊपर उठना होगा और यह तभी सम्भव है जब हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर संगठित हों और एक महान लक्ष्य के प्रति अपने परम कर्त्तव्य को समर्पित हों।

(लेखक प्रसिद्ध टिप्पणीकार हैं)

जगमग दीप जलाएँ

- राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

आओ! आर्य सपूतों आओ! जगमग दीप जलाएँ।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं॥
मिट्टी के दीपों से निश्चय, मिटता नहीं अन्धेरा,
अगणित तारों के उगने से, होता नहीं सबेरा।
दानवता के तिमिरतैन्य ने, महिमामण्डल है घेरा,
रहा नहीं है मानवता का, सुन्दर सुखद बसेरा।
बिखरा किरणें ज्ञान ज्योति की, नया सबेरा लाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं॥
तम के अंचल में सोता है, आज यहाँ दिनमान,
ज्ञान हमारा कहांलुप्त है, विस्तृत क्यों अज्ञान?
चलो, देख लो, कहांसो रहा, भारत का अभिमान,
सत्य शिवम् सुन्दरता पुरित, कहां गए प्रतिमान?
बन करके आलोक पुंज हम, जाग्रत ज्योति जगाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ॥
लोभ-मोह-मद मत्सर का, है फैला पारावार,
काम-क्रोध बढ़ रहा चैतुर्दिक, नष्ट धर्म का सार।
मानवता के तत्वों को क्यों? होता है व्यापार।
भौतिक संस्कृति नहीं कभी, कर सकती है उपचार।
धर्माध्यात्म प्रदीप प्रभाहम, पुनः प्रदीप्त कराएं।
गहन शिविर में भटक रही, जगती को राह दिखाएँ॥
ऐसा दीप जले जिससे, न रहे तिमिर का लेश।
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा, यह प्रगटे ज्ञान दिनेश॥
दम्भ द्वेष-मिथ्या हिंसा का बचे नहीं अवशेष,
प्रेम-दया ममता का, सदा रहे उन्मेध।
शांति सफलता समृद्धि के संगीत मनुज सब गाएं।
गहन तिविर में भटक रही जगती को राह दिखाएँ॥

मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

The Pre-Diwali Festival of Healthcare

❖ Adapted

IT is not a mythology. It is a historial fact.The history which does not enocmpass the research of modern historians. Like archeological finds, one has to link the wires scattered in the pages of various texts. They are in the four *Vedas,* six *Vedangas* (part of the Vedas) and six *up-angas* (ancillory Vedas). The Ayurveda (Science of life) is one of them, and has been attributed mainly to the Atharva-Veda, though many hymns of the Rig-veda and Yajur-veda have its references in unmistakable terms.

If the Vedas are the sacred trusts of our glory and ancient heritage, obviously and medicare, like all other branches of knowledge and sciences. Here we deal only with the topic placed in the caption. The *Charak Samhita* (Sutra Sthan 30/20)—an authoritative treatise on ancient medical system—acknowledges its sources, from Atharve-veda and presents many illustratious and specimens of medical sciences, public health and dietics. Thereafter line up *Brahman Granthas,* and tehre with further eleboration of the Vedic hymns, various rituals *(Karamkandas)* are ordained for the human kind. In this context, the founder of the medical and health care Dhanvanti is worshipped invariably with offerings in the sacrificial fires trailed with the chanting of *Om Dhanvantraye Swaha* vksa èkUoUrj;s Lokgk. In fact the advent of Dhanvantari is celebrated in the country still with great devotion and faith, and in modern terms it is like world health day being observed under the auspices of WHO.

The origin is reflected in the chain of festivals beginning from *Dusshera* in northern India and Mysore, *Durga Puja* in the eastern parts of the country and Navaratra in the south. The advent of *Deepavali* (festival of candles) is marked with and preceded by observing the *Dhanvantri Puja* or *Dhan Teras* (Thirteen day according to Hindu calender)—as it is called in the North-two days before the Diwali. Dhanvantri (god or giver of health) is worshipped that day. To put the records straight, the Day attaches due importnce to the physical health. In the wake of coming winter, certain measures are taken for improving the level of individual and national health. Proper healthcare is the hall-mark of this occasion, when different kinds of fooditems are prepared and offered unto sacrifical fire (Yajna) and shared for eating among the neighbours and relatives. New crops of paddy, sugarcane, ured, moong and til (oilseeds) are the main ingredients in these preparations, which make the body strong to recieve the temper of winter, because in its wake with the change of seasons. Influenza, Malaria fever etc. attack with severity.

However, it is a mystery how the custom of purchasing new untensils of brass, copper (and now of stainless steel) has been associated with the festival of *Dhan Teras.* According to the faith, the more metal vessels are purchased alongwith the earthan oil-candles *(Deepak)* and commodities for pompus celebrations at the coming Divali, the wealth (Dhan) brings its show on this auspicious festival. But if the proverbial health is something impotant, then this festival signifies that health is wealth *(Dhan)* and we should celebrate it as a Festival of Health, in advance of the Deepavali.

Dhanvantri is not a mythological or legendry figure, though the name may have become later a symbol of medicare and healthcare. It is now regarded erroneously as an incarnation of god and is always remembered with respectful epithets of *Shri* and *Bhagawan.* His full name is therefore *Bhagawan Shri Dhanvantri,* the one who took vow to keep humanity perfectly healthy, not only by administering drugs and prescribing treatment, but by forestalling a complete code of living a life free from sickness, mental and physical both. He has a right to be remembered by the generations in all ages. Danvantri has earned such an enviable role in the annals of Indian history for himself and this pre-Deepavali is the outcome of due recognition of his services and an indication good to maintain health at all costs.

Dhanvantari was born in Kashi (Varanasi), a city and centre of various branches or learning since time immemorial. The historical links also establish that he was a powerful ruler of his area, whose sole aim was to work for a completely healthy society even beyond the frontiers of his kingdom. On the basis of etymological anylisits of his name, according to the noted Sanskrit grammarian *Panini,* the *Dhanva,* first part of his name conneotes 'desert'. Consequently, a person whose fame went beyond the deserts (and oceans) for his first invention and discovery of medical science and contribution there to was termed as Dhanwantari.

This contention is reinforced from teh excerpts from the texts of famous *Susrut lqJqr and its commentary by* Ulhana mYgqu. According to both of them, his real name was Divodasa fnoksnkl, or grandson was awarded the title of Dhanvantari. Justifibly, celebrated ancient surge on *susrut* has given different cannotation and etymology of his name. According to him, *Dhanu* word in Sanskrit means an arch *Dhanus* and that ay is the symbol of weapons to fight the diseases, which were nothing but instrument of surgery. *Susrut* and his guru *Acharya Dhanvantari* were thus the noted surgeons of their ages. While *Pratardan* izrnzu Vamaka oked *Brahmdutta* czànÙk were successors to the kingdom of *Divedasa* in Kashi, his intellectual successors in line were *Atri* vf= *Bhrigu* Hk`xq *Vashistha* okf'k"Bk etc, named in the history.

•

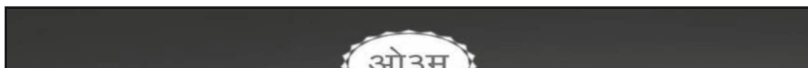

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

भारतीय समाज के सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधार में–

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– डॉ० चन्द्रपाल सिंह

सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधारः–

परिवर्तन समाज का एक अनिवार्य नियम है। आदिकाल से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, चाहे मनुष्य ने उन हो रहे परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई या नहीं। भारतीय समाज भी परिवर्तन के इस नियम से अछूता नहीं रहा, परन्तु शताब्दियों की राजनैतिक पराधीनता के कारण इन परिवर्तनों के प्रति उसमें कुछ असंवेदनशीलता आ गई। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों को दुर्बलता, दरिद्रता, हीनभावना तथा अन्य विकारों का शिकार बनना पड़ा। राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्पीड़न एवं आत्मबोध के अभाव ने भारतीय समाज में बहुत–सी ऐसी कुण्ठाओं को जन्म दिया जिनका सहज उन्मूलन सम्भव नहीं था।

विदेशी शासन से, चाहे वह मुस्लिम रहा हो या ब्रिटिश, उत्पन्न पराजय–भाव ने भारत के विशाल हिन्दू समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचायी। सहस्राब्दियों पूर्व के वैदिक, औपनिषदिक, रामायण तथा महाभारतकालीन समाज द्वारा दी गयी स्वस्थ चिन्तन व संस्कार युक्त परम्परा अतीत की वस्तु बनकर रह गयी जो केवल पुस्तकों तथा कथाओं तक सीमित रही। भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा तथा धर्म और समाज के बीच असन्तुलन उत्पन्न होने लगा। इस स्थिति का समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने अनुचित रूप से उपयोग किया तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, नैतिकता के नाम पर मिथ्या अन्धविश्वास, श्रम तथा कार्य–विभाजन के नाम पर विशेष वर्गों के शोषण का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप समाज में सर्वत्र संकीर्णता, अनुदारता तथा जड़ता फैलने लगी जिसने बाल–विवाह, नारी–स्वाधीनता का अपहरण विधवाओं पर अत्याचार, ऊँच–नीच की भावना पर आधारित छूत–अछूत में विभाजन, बहु–विवाह प्रचलन, दलित व निम्न वर्ग पर अत्याचार, मांसाहार व मद्य–प्रयोग को धर्म व संस्कृति से जोड़ना आदि सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया। ये सामाजिक बुराईयाँ व कुरीतियाँ भारतीय समाज में घुन की तरह लगीं तथा किसी समय के सुदृढ़, स्वस्थ व प्रगतिशील भारतीय समाज को इतना जर्जर व खोखला बना दिया कि वह विदेशी आक्रमण तथा परकीय अत्याचारों का सामना करने में असमर्थ हो गया। भारतीय समाज की इस अधोगति तथा सामाजिक विघटन के लिए बाह्य शक्तियों के साथ–साथ हिन्दू समाज में आये मिथ्या विश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथायें, रूढ़िग्रस्त व जड़ विश्वास भी जिम्मेदार थे! यह किसी समाज की वह अवस्था थी जहाँ उसमें परिवर्तन लाने के लिए बड़े स्तर पर समुदाय के मौलिक मूल्यों व सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करना आवश्यक हो गया था। समाज के पतन को रोकने के लिए समस्त समुदाय की जीवनधारा में परिवर्तन, व्यक्तियों एवं समूहों की आवश्यकताओं को जानकर उनका अध्ययन व विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करना ही समाज–सुधार का उद्देश्य है तथा समाज–सुधार की एक वैज्ञानिक विधि है। स्वामी दयानन्द ने एक धर्म–संशोधक व धर्म–व्याख्याता के साथ–साथ एक समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज की इस अवस्था को पढ़ा, जाना और उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

समाज-सुधार क्या है?

समाज–सुधार सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख अभिकरण है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बुराईयों व कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समाज को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। समाज–सुधार का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, एक ऐसा परिवर्तन जिससे समुदाय के मौलिक मूल्य व संस्थाएं प्रभावित होती हैं। समाज–सुधार द्वारा समस्त समुदाय की जीवन–धारा में परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर सामाजिक व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होता है जिससे समाज प्रगति कर सके।

स्वामी दयानन्द के समाज-सुधार में वैज्ञानिक आधार

भारतीय समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तनों ने महर्षि दयानन्द को बहुत गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय समाज के धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उसकी सामाजिक परिस्थितियों तथा एक साधारण व्यक्ति की व्यथाओं व परेशानियों का वैज्ञानिक अन्वेषण किया। इसीलिए स्वामी जी द्वारा किये गये समाज–सुधार चाहे वह नारी–उत्थान के विषय में हो या हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुप्रथाओं अथवा मूर्तिपूजा या कर्मकाण्डों का खण्डन हो, सभी वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे गये। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द के योगदान में जहाँ धर्म–सुधार एक आधार था वहीं इस समाज व मनुष्य की सामाजिक मनःस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा सोच के द्वारा इसमें परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न भी।

उन्नीसवीं सदी में ही भारतीय समाज की क्षति को रोकने के लिए स्वामी जी ने एक समाजशास्त्री की भूमिका निभाई तथा समाज को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया। उनके समाज–सुधार–सम्बन्धी कार्य तत्वज्ञान और यथार्थता के सिद्धान्तों पर आधारित थे जिनमें मानव–समाज की छोटी से छोटी विकृति की ओर भी ध्यान दिया गया। शिवरात्रि के पर्व पर शिव प्रतिमा का चूहे द्वारा किये गये अपमान की एक साधारण प्रतीत होने वाली घटना ने न केवल स्वामी दयानन्द के जीवन को असाधारण मोड़ दिया अपितु भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जगत् में क्रान्ति का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ। यह ईश्वर–सम्बन्धी अशुद्ध विचारों के विषय में उनका पहला कुठाराघात था।

स्वामी जी के समाज–सुधार में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य को अपनी बुद्धि, विवेकशक्ति तथा चिन्तन–प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते थे तथा उसके लिए उसे उचित वातावरण भी देने का प्रयत्न करते थे। यह उनके प्रगतिशील विचारों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यहाँ मैं १ जुलाई १८७७ को प्रकाशित 'बिरादरे हिन्द' में स्वामी जी के विषय में छपे एक लेख को उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उनके उदार, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया गया है– '' ...... उनके विचार प्रायः उदार तथा अधिकांश विचार इस समय के विद्वतापूर्ण विचारों के अनुकूल हैं। मस्तिष्क उनका अत्यन्त प्रगतिशील प्रतीत होता है। इस व्यक्ति के

हृदय में राष्ट्रीय सहानुभूति और राष्ट्रीय सुधार का बहुत बड़ा उत्साह स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक सुधार की दृष्टि से यह व्यक्ति मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा शत्रु है और उन लोगों में से है जो इन दिनों मूर्तिपूजा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, इस व्यक्ति को इस समय का बहुत बड़ा मूर्तिभंजक कहें तो अनुचित न होगा। जहाँ तक धार्मिक सुधारों का प्रश्न है, ब्रह्म–समाज भी सिद्धान्त–रूप में मूर्तिपूजा को दूर करना और इस संसार में ईश्वरोपासना का प्रचार करना चाहता है। इसलिए उसका तो यह व्यक्ति एक देवदूत की भांति सिद्ध होगा। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। यह व्यक्ति केवल धार्मिक सुधार का ही अभिलाषी नहीं है, अपितु समस्त जातीय बुराईयों के सुधार को दृष्टि में रखता है, जैसे देश में फैल रहा बाल्यावस्था में विवाह आदि। वह स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वतन्त्रता का विशेष रूप से इच्छुक है और उसकी यह भी सम्मति है कि जब तक उनमें शिक्षा न फैलेगी तब तक उन्हें अपनी कैद से छुटकारा प्राप्त न होगा, और तब तक इस देश में किसी स्पष्ट उन्नति की आशा करना व्यर्थ है। सारांश यह है कि जाति से अविद्या और पक्षपात को दूर करना, विद्या का प्रचार करना और सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना और उसे साधारण सभ्यता के रूप में लाकर एक श्रेष्ठ नमूना बनाने का यत्न करना, इस व्यक्ति का सामान्य और विशेष उद्देश्य है।''

– बाल-विवाह का वैज्ञानिक आधार पर विरोध

स्वामी जी के समाज–सुधार के कार्य उनके द्वारा समाज के गहरे अध्ययन पर आधारित थे। यह अध्ययन समाज की वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् सत्य पर आधारित था और सत्य के विषय में उनके विचार बहुत स्पष्ट थे। अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वामी जी ने सत्य के विषय में कहा है कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मेरे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाशन करता है। परन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का विरोध उन्होंने उस समय की सामाजिक स्थितियों की यथार्थता को स्वीकारते हुए किया। उन्हें भली–भाँति ज्ञात था कि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रथा के विरोध को उचित नहीं मानेगा, परन्तु मनुष्य के विकास में बाधक किसी भी प्रकार की प्रथा को वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह सत्य के मार्ग में बाधक थी और मनुष्य के शरीर की संरचना और उसका विकास स्वामी दयानन्द ने आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक आदि से वैज्ञानिक आधार पर यह जान लिया था कि किस आयु में स्त्री, पुरुष में परिपक्वता आती है। इसलिए उनका दृढ़ विश्वास था कि बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें स्वस्थ मनुष्य और स्वस्थ समाज के विकास में बाधक हैं। बाल–विवाह का विरोध करने के पीछे एक वैज्ञानिक आधार यह भी था कि मनुष्य में प्रजनन–क्षमता तथा प्रक्रिया यौवनावस्था (१२ वर्ष से १६ वर्ष) में चरम सीमा पर होती है और इस अवस्था में 'मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता इसलिए उन्होंने स्त्री और पुरुष के विवाह की आयु उनके पूर्ण रूप से विकसित और मानसिक व शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाने पर निश्चित की।

– अर्थशास्त्र पर आधारित गो-रक्षा

स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में गोधन की रक्षा तथा गोहत्या के विरुद्ध संघर्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। गोधन को स्वामी जी मनुष्य–जाति के लिए बहुत उपयोगी और जीवनदायी मानते थे। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गोधन के अर्थशास्त्र को समझाया। यह भी उनके समाज–सुधार का एक वैज्ञानिक आधार ही था जिसमें उन्होंने साधारण मनुष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक सन्तुलित समाज के विकास का मार्ग बनाया। यह उस समय का एक आवश्यक सुधार–क्षेत्र था जिसमें समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने संसाधानों को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिए प्रेरित करना आपश्यक था।

– समग्र सुधार का आह्वान

स्वामी दयानन्द के चिन्तन और कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्टरूप से दिखाई देती है। धार्मिक क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समाकालीन समाज–सुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाना तो उनका लक्ष्य था ही, स्वदेश की हीन अवस्था से भी वे पूरी तरह परिचित थे। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेजी शासन में प्रचलित न्याय–प्रणाली दोषपूर्ण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन काल में प्रचलित पंचायत–प्रणाली, जिसमें ग्राम को इकाई मानकर वहां निवासियों के आपसी वाद–विवादों को मिल बैठकर सुलझा लिया जाता है, ग्राम–पंचायत–व्यवस्था भारत जैसे ग्रामीण प्रधान देश के लिए अनुकूल है। ब्रिटिश राज्य की समाप्ति के पश्चात् भारत में स्थानीय स्तर पर जो पंचायत राज्य स्थापित किया गया उसका आधार वही प्राचीन पंचायत राज्य प्रणाली है जिसे स्वामी जी भारतीय स्थानीय स्वशासन के लिए उचित मानते थे। यह स्वामी दयानन्द का भारतीय समाज के विषय में गहन चिन्तन का प्रतीक है और भारतीय समाज की परिस्थितियों का एक वैज्ञानिक मूल्यांकन। संक्षेप में, महर्षि दयानन्द की विचारधारा एक प्रगतिशील विचारधारा थी और वे सत्य के अन्वेषक थे। उनका दृष्टिकोण व्यापक था, वे जीवन और समाज की पूर्ण व्याख्या करना चाहते थे और अपनी विचार क्रान्ति में सबको साथ लेकर चलना उनका ध्येय था, यही समाज–सुधार में महत्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक तथ्य हैं जो स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में प्रमुख थे। अन्त में डॉ० सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा उद्धृत ये शब्द स्वामी जी के व्यक्तित्व व वैज्ञानिक सोच को और अधिक स्पष्ट करते हैं–

''यदि कोई दयानन्द के दृष्टिकोण को समझले तो यदि वह ईसाई है तो और भी अधिक अच्छा और ईमानदार ईसाई बन सकता है; हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बन सकता है; जैन, मुसलमान, सिक्ख, पारसी है तो अच्छा जैन, मुसलमान, सिक्ख और पारसी बन सकता है; यदि वह राजनीतिक और राष्ट्रवादी है तो दयानन्द के दृष्टिकोण को समझ लेने पर वह अपने क्षेत्र में अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकता है, यदि वह समाजवादी और साम्यवादी है तो वह अच्छा समाजवादी या साम्यवादी बन सकता है; ब्राह्मण अच्छा ब्राह्मण, शूद्र अच्छा शूद्र बन सकता है।''

एम.टी.एच.-७, विश्वविद्यालय परिसर,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११६

महर्षि दयानन्द और विश्व शांति

- *श्री आर्यभिक्षु, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर*

महर्षि जैमिनी के पश्चात् ऋषि परम्परा में स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रथम महापुरुष हैं, जिन्होंने शाश्वत सनातन तथा सार्वभौम मानव–धर्म वेद धर्म की दुहाई ही नहीं दी, अपितु उसके लोप होने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न संसार के समस्त मत, तन्त्र तथा सम्प्रदायों की विधिवत् समीक्षा की (सत्यार्थप्रकाश ११ से १४ वें समुल्लास तक)। वह स्वयं स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में लिखते हैं 'ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि–मुनियों द्वारा अनुमोदित और प्रतिपादित सनातनधर्म ही हमारा धर्म है। इसे मानना व मनवाना अपना अभीष्ट है। किन्तु कोई भी नूतन मत, पन्थ अथवा सम्प्रदाय चलाने की किञ्चित्मात्र भी इच्छा नहीं है।' ऐसा लिखने में उनका हेतु उनके शब्दों में स्पष्ट है। 'सर्व सत्य का प्रचार कर सबको एक मत में करा, द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'' इस कथन में उनके हृदय में विश्व–शान्ति के लिए एक ठोस रचनात्मक पुरोगम की स्पष्ट आभा मिलती है।

संसार में अशान्ति के हेतु दो ही मौलिक हेतु हो सकते हैं। प्रथम भोग सामग्री की वितरण व्यवस्था और द्वितीय, भोक्ता का भोग के साथ सम्बन्ध। प्रथम स्थिति का समाधान सामाजिक क्रान्ति तथा राजनैतिक उथल–पुथल से होता रहता है। द्वितीय के लिये स्थान, समय तथा परिस्थिति के आधार पर पुरुष विशेष द्वारा उपस्थित विचार तथा विधि कार्य करते हैं। पहले के विस्तार स्वरूप राजतन्त्र से लेकर लोक तन्त्र तक की व्यवस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ और दूसरे के विस्तार स्वरूप मत, ग्रन्थ तथा सम्प्रदाय के रूप में पारसी, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन इत्यादि आचार पद्धतियों का प्रादुर्भाव हुआ। (जिन्दावस्ता, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, त्रिपिटक)। इन्हीं दोनों पाटों के बीच विश्व की शान्ति पिसती रही और आज अपने शिखर पर पहुँच चुकी है। विश्व में अशान्ति के मूल कारणों में दो प्रमुख हैं। राजनीतिक मान्यताओं की रस्सा–कसी और मत–मतान्तरों की संख्या वृद्धि में होड़ की प्रवृत्ति। विश्व के इतिहास में जारशाही और उसका दुःखद अन्त एक ओर है, तो ईसाई मत की ही दो शाखाओं, कैथलिक और प्रोटेस्टेन्ट के मध्य की रक्त–रंजित बीभत्स गाथाएँ दूसरी ओर है। इस प्रकार जब दोनों ओर की स्थिति अत्यन्त भयावह तथा विनाशकारी स्वरूप में विद्यमान थीं तब इस धरा–धाम पर बाल–ब्रह्मचारी, युगपुरुष, क्रान्ति–द्रष्टा भगवान् दयानन्द का प्रादुर्भाव आर्यावर्त की पवित्र ऋषि भूमि में सम्पूर्ण अविद्या तथा अज्ञान का नाश करके विश्व–शान्ति स्थापनार्थ उन्नीसवीं सदी के मध्य में हुआ।

महर्षि दयानन्द दया का था सागर,
जगत की व्यथा का दवा बनने आया।
तिमिर छा रहा था अविद्या का घर–घर,
गगन में दिवाकर नया बनके आया।।

महर्षि ने इस व्यापक अविद्या, अज्ञान तथा सत्य का भेद न करते हुए सिंहनाद किया, ''मेरा अपना मन्तव्य वही है जो सबको तीन काल में एक–सा मानने योग्य है। मेरी कोई अपनी नवीन कल्पना नहीं है, अपितु जो सत्य है उसे मानना और मनवाना और जो असत्य है उसे छोड़ना और छुड़वाना अपना अभीष्ट है।'' इसी सत्य के प्रकाशन संदर्भ में उन्होंने विश्व के समस्त नागरिकों के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जय घोष दिया– **'अपने देश में अपना राज्य'।** इस प्रकार संसार के समस्त पराधीन राष्ट्रों को एक नूतन चेतना तथा स्फूर्ति इस दिशा में प्राप्त हुई और अपने देश के साथ ही अन्य पराधीन राष्ट्र भी स्वाधीनता के लिए खड़े हो गये। अनेकों ने परिणाम स्वरूप वर्षों की दासता से मुक्ति पाई और आज भी अनेक देश इस दिशा में संघर्षरत हैं। यह सब भगवान् दयानन्द के एक मन्त्र का चमत्कार है। उर्दू के एक कवि ने ठीक ही कहा है –

तू नहीं, पैगाम तेरा हर किसी के दिल में है।
जल रही अब तक शमा रोशनी महफिल में है।।

महर्षि ने इस दिशा में स्थायित्व लाने के निमित्त एक आन्दोलन का भी सूत्रपात किया– वह था संसार के श्रेष्ठ पुरुषों का संसार के कल्याण के लिए एक वेदी पर उपस्थित होना। इस आन्दोलन को निरन्तर चालू रखने के लिये संगठन का गठन भी किया जिसे :**'आर्यसमाज'** अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों का संगठन '' Society of the noble men '' कहते हैं। महर्षि ने इस आन्दोलन के तीन चरण निश्चित किये– एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक विश्व '' One God, one religion and one world '' संसार में अनेक महापुरुषों ने इस दिशा में अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार कार्य किया किन्तु इस मौलिक त्रिसूत्र के अभाव में उनके सम्पूर्ण प्रयास विफल रहे। उदाहरण स्वरूप, मार्क्स का सर्वहारा दर्शन तथा गाँधी जी का सर्वोदय। यहाँ एक ईश्वर से तात्पर्य एक प्राप्तव्य – ''One distinction and one God'' से है। एक धर्म से अभिप्राय एक आचरण–संहिता से है और एक विश्व से अर्थ एक परिवार से है। जिस प्रकार से एक परिवार में रहने वालों का एक आदर्श इसकी प्राप्ति का एक माध्यम अर्थात् सभी साधकों के साधन तथा साध्य का सामञ्जस्य। महर्षि ने इसके लिए तर्क युक्ति, प्रमाण तथा प्रयोग के आधार पर संसार के प्रमुखतम आचार्यो से वार्ता की और अपेक्षित प्रयास भी किया। उनके शब्दों में विश्व की अशान्ति का मूल कारण इस प्रकार के भेदों के माध्यम से उत्पन्न होने वाला घृणा और द्वेष का वातावरण ही है। ''यद्यपि प्रत्येक मत, पन्थ तथा सम्प्रदाय में कुछ–कुछ अच्छी बातें हैं तथापि आचार्यो में परस्पर मतभेद होने के कारण अनुयायियों में मतभेद कई गुणा बढ़कर घृणा और द्वेष की उत्पत्ति करता है। क्या ही अच्छा होता कि सभी आचार्य प्रवर एक स्थल पर बैठकर मनुष्यमात्र के लिए सर्वतन्त्र, सार्वभौम तथा सनातन नियमों का संकलन कर पाते, जिससे मानव समाज घृणा और द्वेष से मुक्त होकर श्रद्धा और स्नेह की पवित्र स्थिति को प्राप्त होता।'' उन्होंने चाँदपुर (उत्तर–प्रदेश) में एक धर्म मेला के अन्दर इस प्रकार के विचार–विमर्श की व्यवस्था भी की। उसमें पादरी, मौलाना, पण्डित सभी उपस्थित थे। महर्षि ने तर्क, युक्ति, प्रमाण और प्रयोग से उन सबको सहमत न होते देख अन्ततोगत्वा एक अद्वितीय विधि उपस्थित की। सब अपने–अपने मत के श्रेष्ठ विचार पृथक्–पृथक् पत्रों पर लिखें। पुनः सबको एक साथ एकत्रित किया जाये और जो–जो विचार तथा आचार उपस्थित हों उनमें से सर्वमान्य विचार–आचार एक स्थल पर संकलित कर लिये जावें और हम सब उन पर हस्ताक्षर कर देवें, जिससे यह आचरण संहिता संसार के सभी मनुष्यों के लिए मान्य, व्यावहारिक तथा उपयोगी घोषित हो जावे, और इस प्रकार परस्पर विभिन्न मत मतान्तरों के आधार पर विभाजित मानव समाज एकता के सूत्र में बंधकर विश्व में शान्ति स्थापित कर सके। उपस्थित किसी भी प्रतिनिधि (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा ब्रह्म–समाज) ने इसका स्वागत अपने क्षुद्र स्वार्थ तथा नेतागिरि के कारण नहीं किया।

महर्षि भौतिक जगत् में भी अर्थ के दूषित वितरण के परिणाम का समाधान बताते हैं जो आज की समस्या का एकमात्र हल है। आज मजदूर जहां एक ओर कम से कम काम करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर अधिक से अधिक वेतन चाहता है और इसी प्रकार महाजन जहाँ एक ओर अधिक से अधिक काम लेना चाहता है वहीं दूसरी ओर कम से कम वेतन देना चाहता है। तात्कालिक समाधान के रूप में इस विषम मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही मजदूर यूनियन, कर्मचारी संघ तथा मर्चेन्ट एसोसियेशन का विश्व में जाल बिछा दीखता है। समाधान तो ऋषि इसे पूर्णतया उलट देने में मानते हैं। अर्थ क्या हुआ? मजदूर अधिक से अधिक काम करें और कम से कम वेतन लेने की इच्छा रखें और महाजन कम से कम काम लेकर मजदूरों को अधिक से अधिक देने की कामना करें। विश्व–शान्ति के लिए व्यक्ति को कम से कम समाज से लेना होगा और अधिक से अधिक समाज को देना होगा तभी वर्तमान अशान्ति, अनिश्चिन्तता तथा अराजकता का अन्त होगा अन्यथा कदापि नहीं। मुझे कहने दीजिए– आज हमें भोग में बासा– होटल की प्रवृत्ति से हट कर परिवार में पाकशाला प्रवृत्ति में आना होगा। हम जब होटल में भोजन करते हैं तो कम से कम होटल वाले को देकर अधिक से अधिक खा लेना चाहते हैं। किन्तु जब हम परिवार में भोजन करते हैं तो कम से कम खाकर अधिक से अधिक परिवार के अन्य सदस्यों के लिए छोड़ना चाहते हैं। ऐसा मन कब बनेगा ? जब तन के निखार निमित्त दर्पण की भांति हमें मन के सुधार के लिए दर्शन मिलेगा। यह दर्शन जिस आचरण–संहिता में उपलब्ध है वह परमात्मा द्वारा प्रदत्त अपनी प्रजा के निमित्त विधि–निषेधात्मक वेदज्ञान है, जो सम्पूर्ण सृष्टि की अवधि के भीतर (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) उपस्थित विश्व के सभी श्रेष्ठतम उपभोक्ताओं मनुष्यमात्र के लिए समान रूप से सुखदायक तथा उपयोगी है। उससे हम न्यूनतम परिश्रम द्वारा अधिकतम सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। इसे उपभोग के नियम– लातगयर कवायद '' Laws of Consumption ''कहते हैं। इसके अनुकूल चलकर हम शाश्वत सुख–आनन्द–मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। जो मानवमात्र का एकमात्र अभीष्ट लक्ष्य है। इस आचरण–संहिता का प्रमुख भाग कर्मफल मीमांसा कहलाता है और वह इस प्रकार है– दर्शनकारों की व्यवस्था में आयु, जाति तथा भोग मनुष्य को पूर्व जन्म के आधार पर ही मिलते हैं (यहां जाति शब्द का तात्पर्य योनि – पशु, पक्षी, पतंग, मनुष्य आदि से है)। भोग दो प्रकार के हैं– एक सुखद तथा दुःखद। दुःखद भोग में हम किसी का सहयोग प्राप्त कर ही नहीं सकते। कौन होगा ऐसा जो मेरे पचास बेत के दंड में कुछ स्वयं सहन कर मेरा सहयोग करना चाहेगा। किन्तु सुखद भोग में हम किसी को भी अपना भागीदार बना सकते हैं, और कोई भी भागीदार बनने को तैयार हो सकता है। उदाहरणार्थ मेरे पास भोग के पचास आम हैं। हम सब स्वयं भी खा सकते हैं और इनमें से आवश्यकतानुसार तथा इच्छानुसार चार आम खाकर शेष इक्कीस आम किसी को भी खाने को दे सकते हैं। स्वयं सम्पूर्ण खा जाने पर भोग मूलतया समाप्त हो जाता है। किन्तु कुछ खाकर और शेष दूसरों को खिलाकर हम दूसरों को खिलाये हुये आमों के भोग के द्वारा अपने लिये नूतन कर्म का सृजन कर लेते हैं जो हमें पुनः इस जन्म अथवा दूसरे जन्म में मिलेगा। इस दर्शन के प्रचार और प्रसार में प्रत्येक व्यक्ति खाने के चक्कर से निकल कर खिलाने की होड़ में खड़ा हो जायेगा। तब विश्व में अशान्ति का प्रश्न ही नहीं रहेगा और स्थायी शान्ति स्वतः उपस्थित हो जायेगी। आज हम व्यवहार पक्ष में ऐसा मानते हैं– '' Foolishmen invite or wisemen eat '' मूर्ख व्यक्ति खिलाते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति खाते हैं। किन्तु स्थिति तब बदल जावेगी और नई लोकोक्ति तैयार होगी– '' Wise men invite and foolishmen eat '' बुद्धिमान व्यक्ति खिलाते हैं और मूर्ख व्यक्ति खाते हैं। परिणाम स्वरूप समस्त मानव समाज एक परिवार की संज्ञा को प्राप्त हो जायेगा जिसका प्रत्येक सदस्य कम से कम उपयोग करके अधिक से अधिक दूसरों के उपभोग निमित्त छोड़ने में अपने सम्पूर्ण विवेक और कौशल को लगा देगा, जिससे विश्व–शान्ति का महर्षि कल्पित रूप साकार हो उठेगा।

''अपनी आवश्यकता से अधिक पर अपना अधिकार मानना सामाजिक हिंसा है।'' इससे बचना ही विश्व-शान्ति का एकमात्र हल है।

आर्य समाज के कर्मठ आर्य नेता
डॉ. धीरज सिंह जी का असमय निधन

डॉ. धीरज सिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान, कर्मठ आर्यनेता डॉ. धीरज सिंह जी का दिनांक 22 अक्टूबर, 2021 (शुक्रवार) को असामयिक निधन हो गया है। उनके निधन का समाचार सुनकर उत्तर प्रदेश तथा आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई। डॉ. धीरज सिंह जी आजीवन आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में दिन-रात लगे रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वे कोषाध्यक्ष, उप-प्रधान व प्रधान पद पर भी सुशोभित रहे। वह उत्तर प्रदेश के खुर्जा नगर में कई विद्यालयों का संचालन एवं प्रबन्धन अपनी देख-रेख में कर रहे थे। प्रदेश में वह आर्य समाज के एक स्तम्भ के रूप में जाने जाते थे। उत्तर प्रदेश में आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने वाले ऐसे कर्मठ, लगनशील एवं कर्त्तव्यनिष्ठ आर्य नेता का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है।

डॉ. धीरज सिंह जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके पारिवारिकजनों एवं इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मेरठ के चिन्दौड़ी गांव में सामवेद पारायण महायज्ञ भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया

– स्वामी आर्यवेश

सैकड़ों ग्रामीणों ने डाली आहुति, युवाओं ने लिया संकल्प

मेरठ के चिन्दौड़ी में सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य समाज चिन्दौड़ी के तत्वावधान में आयोजित इस महायज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सत्यवेश (शुक्रताल) रहे तथा आचार्य की भूमिका श्री अंकित शास्त्री ने निभाई। इस कार्यक्रम का समापन विजयदशमी के अवसर पर किया गया। जिसमें सैकड़ों ग्रामीणों ने आहुति डाली तथा सैकड़ों युवाओं ने बुराईयों से दूर रहने का संकल्प भी लिया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक ब्र. सहसरपाल आर्य ने आर्य युवक परिषद् चिन्दौड़ी का गठन किया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से पहुँचे। गांव के उत्साही आर्य नव–युवकों ने स्वामी जी को गांव से 10 किमी. दूर से ही मोटर साईकिलों के काफिले के साथ आर्य समाज के नारे लगाते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे।

इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महाभारत के पश्चात् एक मात्र महापुरुष एवं ऋषि थे जिन्होंने वेदों को पुनः प्रतिष्ठापित किया और दुनिया के लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। महर्षि दयानन्द जी पहले महापुरुष थे जिन्होंने 1857 की क्रांति फेल हो जाने के पश्चात् स्वतंत्रता आन्दोलन का बीड़ा उठाया और अनेक क्रांतिवीरों को बलिदान के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के यज्ञ की अग्नि को अपनी प्रेरणा से प्रज्जवलित रखा। महर्षि दयानन्द जी ने समाज सुधार के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज को एक बार फिर अपना पुराना तेजस्वी एवं आन्दोलनात्मक स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा। उसे सामान्य जनता के दुःख–दर्द को समझकर उसकी दवा बनना होगा। वर्तमान में चहुं ओर जनता त्रस्त है। त्राहि–त्राहि मची हुई है। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, युवाओं के चरित्र पर अश्लीलता एवं अपसंस्कृति आक्रमण कर रहे हैं, किसान कर्ज के बोझ से आत्महत्या करने को मजबूर है तथा करोड़ों पढ़े–लिखे नौजवान बेरोजगारी की चक्की में पिस रहे हैं। भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है, शराब की नदियाँ बह रही हैं और युवा वर्ग नशे की भयंकर चपेट में है। धर्म के नाम पर अनेक कथित गुरु एवं मठाधीश अपने काले कारनामों से धार्मिक जगत को कलंकित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को आगे आना चाहिए। आर्य समाज के एक–एक कार्यकर्ता को आगे आकर जनता की समस्याओं के समाधान के लिए उनके साथ खड़ा होना चाहिए और विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों पर जन–जागरण के द्वारा आम जनता को संगठित करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन आर्य विवेक ने किया। इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी, प्रधानाचार्य श्री कृष्णपाल, श्री लोकेश, श्री दीपक प्रधान, श्री तेजवीर सिंह, श्री सुरेन्द्र प्रधान, श्री विवेक फौजी, श्री सुरेन्द्र प्रधान, श्री कालू सिंह, श्री नीटू चौधरी, श्री मोहित सहारण, श्री अरुण लाला, श्री अमित सहारण आदि मौजूद रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।